अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ का साप्ताहिक मुखपत्र

भूदान-यज्ञ

भूदानयज्ञमूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रांति का संदेशवाहक

सौर चैत्र २९, शके १८७९ — सम्पादक : धीरेन्द्र मजूमदार

वार्षिक मूल्य ६) — एक प्रति २ आना : १३ नये पैसे

वर्ष-३, अंक-२९ 卐 राजघाट, काशी 卐 शुक्रवार, १९ अप्रैल, '५७

स्वच्छता बाहर भी, भीतर भी !

हिंदुस्तान में साबुन का खर्च बढ़ रहा है। यह लक्षण हमें अच्छा लगता है। —याने हरेक को स्वच्छता की आवश्यकता महसूस हो रही है—चाहे वह स्वच्छता का गलत ख्याल हुआ हो। और अगर वह गलत हुआ हो, तो उसे सुधारना पड़ेगा। मिट्टी में बैठने में शर्म आती हो, कपड़े पर ज़रा भी मिट्टी नहीं लगनी चाहिए, यह गलत है ! परंतु इससे बाहर की स्वच्छता की भावना बढ़ती है, तो इससे दिल की स्वच्छता की इच्छा होती है। बाहर की शुद्धि का परिणाम अंदर होता है और अंदर की शुद्धि का परिणाम बाहर होता है। मनुष्य जब अपना स्वार्थ कुछ कम करता है, तो वह परिवार के लिए त्याग करता है। परिवार की भावना बढ़ानी है, तो अपना स्वार्थ कम करना पड़ता है। इसलिए बाहर की परिस्थिति का अंदर परिणाम होता है और अंदर की परिस्थिति का बाहर परिणाम होता है। इसलिए ईश्वर का राज्य अंदर और बाहर, दोनों बाजू से लेना पड़ेगा।

(पोतनदी, मदुरा, २२-३) —विनोबा

खादीवालों से—

(विनोबा)

आज हम खादी का उत्पादन करते हैं, अच्छा हिसाब रखते हैं, दया-भावना रखते हैं; लेकिन लोगों ने अगर खादी कम खरीदी, तो क्या करते हैं ? सोचते हैं कि चरखे में कुछ सुधार किया जाय, सस्ती खादी पैदा की जाय, ताकि उसकी ज्यादा खपत हो ! यह ठीक है कि यह भी एक अक्ल है, लेकिन देश पर विचार का प्रभाव डालना चाहिए और खादी की स्वतंत्र योग्यता सिद्ध करनी चाहिए। लोगों के सामने खद्दर रख कर कहना चाहिए कि देखो, यह चीज महँगी है, इसलिए उसे खरीदना तुम लोगों का धर्म है। क्या सस्ता होने के कारण आप लोग चोरी का माल खरीदना चाहेंगे ? डेढ़ तोले वज़न का सोने का गहना दस रुपये में मिलता है, तो आप उसे खरीदेंगे या उसको चोरी का माल समझ कर पुलिस के सुपुर्द करेंगे ? जिस तरह से हम काम करते हैं, उस तरह डेढ़ रुपये गज़ खादी पड़ती है। अब आठ आने गज़ कपड़ा अगर बाजार में कोई बेचता है, तो आपको शंका आयेगी कि यह चोरी का माल तो नहीं है ? मिल का कपड़ा सस्ता मिलता है, क्योंकि लाखों लोगों को वह बेकार बना कर चंद लोगों को मजदूरी देता है ! उन बेकारों को जो खाना खिलाना पड़ता है, उसका हिसाब किया जाय, तो उस कपड़े की कीमत साढ़े तीन रुपये गज़ पड़ेगी; क्योंकि वह दस मनुष्य को बेकार बना कर एक मनुष्य को काम देती है।

मजदूरों का शोषण

इसलिए समझने की चीज है कि खद्दर को ज्यादा सस्ता करने की बात नहीं है, बल्कि खद्दर को महँगा बनाने की बात है। आप लोग इधर दान-धर्म करते हैं और उधर लोगों को कम-से-कम मजदूरी देकर लूटते हैं ! हम कहते हैं कि वह दान ही इसमें डाल दीजिये और महँगी खद्दर खरीदिये। जिस दान से देने वाला घमंडी और लेने वाला दीन बनता है, वह दान हमें नहीं चाहिए। आप महँगा कपड़ा खरीदेंगे, तो आपकी बहनों को मजदूरी मिलेगी, गाँव वालों को समाधान होगा। इसलिए लोगों के सामने आकर सस्ता-महँगा वाला मामला स्पष्ट बता कर चोरी का माल नहीं खरीदना चाहिए, यह समझाने का काम सर्वोदय का काम है।

संरक्षण का प्रश्न

सर्वोदयवाले ही "खादी महँगी है, इसलिए खरीदो," ऐसा कहने की हिम्मत नहीं करेंगे, तो दूसरा कौन करेगा ? बड़े-बड़े नेता तो कहते हैं कि खादी को अपने पाँव पर खड़े रहना चाहिए। हम कहते हैं कि खद्दर अपने पाँव पर नहीं, तुम्हारे पाँव पर खड़ी होगी, क्योंकि खद्दर के पाँव नहीं हैं, तुम्हारे पाँव हैं ! वह क्या जानवर है कि अपने पाँव पर खड़ी हो जायेगी ? टाटा का लोहे का कारखाना, शक्कर की मिलें, ये क्या अपने पाँव पर खड़ी रही थीं ? सरकार की ओर से उनको संरक्षण दिया गया, बाहर से आने वाली शक्कर पर टैक्स लगाया गया, तब वे टिकी हैं। बड़े-बड़े धंधे भी संरक्षण से ही टिके हैं। तो, खद्दर को क्यों अपने पाँव पर खड़े रहने को कहते हैं ? माँ ने बच्चे को छोटे से बड़ा बनाया। बच्चे के अपने हाथ में सत्ता आ गयी, तो माँ को कहने लगा, "अब तुम अपने पर जीओ री !" जिस खादी ने तुमको स्वराज्य दिलाया, उसको स्वराज्य-प्राप्ति के बाद कहते हो कि अब हमारा संरक्षण तुमको नहीं मिलेगा। स्वराज्य-प्राप्ति के पहले खादी की पोशाक पहन कर लोगों के पास पहुँचते थे, तब लोग आपकी बात सुनते थे। आज भी कांग्रेस वालों को खद्दर का लिबास पहनना पड़ता है। इतनी प्रतिष्ठा जिस खद्दर ने दी, उसको कहते हैं कि हमारी तरफ से तुमको संरक्षण नहीं मिलेगा, अपने पाँव पर खड़े रहो और खुले बाजार में मिलों से मुकाबला करो। वह मिलें तो हजारों लोगों को बेकार बना कर खड़ी हुई हैं। क्या अब यह मुकाबला हो सकेगा ? नहीं। इसलिए अब यह सारा सर्वोदय का विचार लोगों के सामने स्पष्ट रखना चाहिए।

परिवार-भावना की व्यापकता

देश को स्वराज्य तब मिला, जब कि परदेशी माल पर बहिष्कार डाला गया। गाँव-गाँव को स्वराज्य तब मिलेगा, जब बाहर की वे चीजें गाँव में आनी बंद हो जायेंगी, जो गाँव में हम पैदा कर सकते हैं। जैसे देश के स्वराज्य के लिए बाहर का माल सस्ता होने पर भी हम वह खरीदते नहीं थे, वैसे ग्रामराज्य के लिए सस्ता हो, तो भी बाहर का माल खरीदना नहीं चाहिए। यह परिवार-भावना जब व्यापक होकर गाँव तक फैलेगी, तभी यह हो सकेगा। इसीको ग्रामदान कहते हैं।

कार्यकर्ताओं को गाँव-गाँव पहुँचना चाहिए। वे चरखे का प्रयोग करेंगे, उसकी गति बढ़ायेंगे, उसमें सुधार करेंगे, लोगों को अच्छी तरह कातना सिखायेंगे—यह सब तो जरूर करेंगे, उसके बिना धंधा खड़ा ही नहीं होगा, लेकिन इतना काफी नहीं है। इसके पीछे जो स्वराज्य, ग्रामराज्य का बुनियादी विचार है, वह लोगों के सामने रख कर समझाना पड़ेगा। उसके विरोध में जो बड़े-बड़े लोग बोलते होंगे, उनकी गलती बतानी होगी।

बीच में करघे को पॉवर (बिजली) लगाने की बात चली थी। उसमें एक बात यह भी थी कि जो अपना विवरण नहीं भेजेगा, उसको काम करने की मनाही होगी ! यह सरकार का पहले ऑर्डर (हुक्म) था। हमने वह पढ़ा था। बाद में वह जरा सौम्य हो गया। ग्रामदान के गाँव में लोग यह कबूल नहीं करेंगे। वहाँ लोग कहेंगे कि "हमारे गाँव में किस तरह और क्या करना है, हम देख लेंगे। तुमको मदद करनी है, तो तुम कर सकते हो। हमारे ही पैसे आप लेते हैं, तो मदद करना आपका धर्म है; परंतु हमारे गाँव की योजना हम ही करेंगे। हमारे गाँव की योजना हमारी इच्छा के विरुद्ध कोई नहीं लाद सकता। जो चीज हम गाँव के लिए नहीं चाहते हैं, वह ठूसी नहीं जा सकती।"

जनता को बेकार बनाने का स्वातंत्र्य !

एक गाँव था। उसमें खद्दरवाले काम कर रहे थे। गाँव में दस-पंद्रह तेली थे, जिनका काम अच्छा चल रहा था। किसी एक मूर्ख ने वहाँ एक तेल की मिल शुरू कर दी, तो बाकी के सारे तेली बेकार हो गये। हम उस गाँव में जा पहुँचे। हमारे पास शिकायत की गयी। हमने सरकार वालों से पूछा, तो जवाब मिला कि विधान से उस मिल वाले को हम रोक नहीं सकते। उसको हक है ! गाँव के तेलियों को बेकार बनाने का कुछ लोगों को स्वातंत्र्य है ! अब क्या कहा जाय ? यह चलता है, क्योंकि गाँव लाचार है। गाँव मुर्दा बना हुआ है। उसमें जान नहीं

है, प्राणहीन बन गया है। गाँव में जाति-भेद, धर्म-भेद, भाषा-भेद, ऊँच-नीच आदि अनेक प्रकार के झगड़े हैं। उसमें अब यह पक्ष-भेद और आ गया! सारा गाँव एक नहीं होता, इसलिए गाँववाले लाचार हैं और यह सब विधान आदि का नाटक चलता है! गाँव के लोग उत्पादन करते हैं। फिर भी शक्तिहीन हैं, प्राणहीन हैं, क्योंकि एक-दूसरे में मेल नहीं है। ग्रामदान से गाँव का एक परिवार बनता है। हम चाहते हैं कि हरेक गाँव ग्रामदानी हो। ग्रामदान के बाद ही ग्रामोद्योग को प्रोत्साहन मिल सकेगा।

इसलिए आज हम खादीवालों से कहते हैं कि भाइयो, तुम लोग अब यह अपनी बात लोगों के सामने रख कर उनको समझा कर तुम्हारी ताकत बनाओ। सर्वोदय का काम अच्छा है, इतना कहने से काम नहीं होगा। वह अत्यन्त उचित और जरूरी है, यह लोगों के दिल में जँचाना होगा। लोगों को यह समझाने लिए आपको भूदान, ग्रामदान से एक मौका मिल रहा है। लोग यह समझने को राजी हैं, इसलिए तुम लोग अपनी ताकत बनाओ और हिम्मत के साथ आगे आओ।

(करीवलमवंदनल्लूर, जि० तिरुनेलवेली, ४-४)

त्रिविध क्रान्ति की आवश्यकता

(धीरेन्द्र मजूमदार)

प्रश्न है कि क्रान्ति क्या चीज है?

आज क्रान्ति किसे कहते हैं? कुछ भी करो, तो क्रांति ही मानी जाती है। बात-बात में क्रान्ति! एक आदमी दूसरे आदमी से झगड़ा करता है, तो वह क्रांति! एक वर्ग दूसरे वर्ग से झगड़ा करता है, तो वह क्रान्ति! ३६ साल पहले हम लोग एक क्रान्ति करना चाहते थे। लोग समझे कि अंग्रेजों को हटा कर देश में स्वराज लाने से क्रान्ति होगी। लेकिन वह क्रान्ति नहीं थी। मान लीजिये कि हमारी जमीन पर कोई दूसरा आदमी कब्जा कर लेता है, तो हम क्या करते हैं? लाठी लेकर हम उसे भगा देते हैं। तो फिर यह भी क्रांति है! इंग्लैंड से अंग्रेजों ने आकर हिन्दुस्तान की जायदाद पर कब्जा कर लिया था, उनको निकाल देना यदि क्रान्ति है, तो मेरी जमीन पर जिस आदमी ने कब्जा किया है, उसे मार कर निकाल देना भी क्रान्ति होगी! नहीं। यह क्रान्ति नहीं, वह तो झगड़ा है। पट्टीदारों में जिस तरह झगड़ा होता है, उसी तरह हमने अंग्रेजों से झगड़ा किया और उन्हें निकाल दिया। हमने सत्याग्रह करके उन्हें निकाला। जार्ज वाशिंग्टन ने भी अंग्रेजों को निकाला। फर्क यही था कि उन्होंने बम फेंक कर निकाला और हमने सत्याग्रह कर के निकाला। लेकिन वह कोई क्रान्ति नहीं थी। क्रान्ति यह थी कि सन् '२१ में यहाँ हरिजनों के साथ बैठ कर हम खाते थे। उसके बाद दूसरे लोग भी खाने लगे, यह है क्रान्ति। दूसरे के अधिकार को हस्तांतरित कर लेने को युद्ध कहते हैं। समाज की पद्धति को बदलने के लिए जो आन्दोलन होता है, उसे "क्रान्ति" कहते हैं। अब विनोबा जो क्रान्ति कर रहा है, जिसकी चर्चा बापू ने की थी, वह ऐसी नहीं है कि किसी आदमी का दिमाग खराब हो और वह क्रान्ति की बात करने लगे।

क्रान्ति का अर्थ

आप नक्शा बना कर कोई घर बनाते हैं। उसे आप अपनी सुख-सुविधा के लिए बनाते हैं। कुछ दिनों में वह मकान आपके परिवार के लिए कष्ट का कारण बन जाता है। मकान सड़ता है, गलता है। चार भाई हैं, तो उसके चार हिस्से हो जाते हैं। चार दीवारें खड़ी हो जाती हैं। उनके भी बच्चे होते हैं, इसलिए फिर उस मकान के हिस्से होते हैं। इस तरह बढ़ते-बढ़ते उसमें रहना ही मुश्किल हो जाता है। इस तरह से परिस्थिति बदल जाती है। पारिवारिक स्थिति के कारण उस मकान में परिवर्तन होता है। तब सोचते यह हैं कि अब तो इसमें रहना ही असम्भव है। इसमें तो हमारा अस्तित्व ही नहीं रहेगा। यह देख कर नयी आवश्यकता के अनुसार नया मकान बनाया जाता है। इसे कहते हैं "क्रान्ति"। याने पुरानी चीज, पुरानी पद्धति, पुराने ढाँचे के मकान को, जो कि आज की परिस्थिति में अनावश्यक ही नहीं, संकट का भी कारण बन रहा है, उसे ढहा कर दूसरा मकान बनाने की प्रक्रिया को "क्रांति" कहते हैं।

राजा-रजवाड़ों ने, सामन्तवाद ने मानव-समाज की प्रगति नहीं की, ऐसी बात नहीं है। आज का मनुष्य-समाज, मानव की कला और संस्कृति राज-तन्त्र और सामन्तवाद की देन है। पर जब वह मानव के लिए संकटपूर्ण हो गया, तो लोगों ने उसे उठा कर तोड़ दिया। पूँजीवाद आया। उसकी भी अपनी कुछ देन है। विज्ञान का विकास पूँजीवाद ने ही किया है। लेकिन आगे चल कर विज्ञान ने ऐसे-ऐसे मौलिक शस्त्र निकाले कि विज्ञान ही मनुष्य के अस्तित्व के लिए खतरा हो गया। आज मानव-समाज के सम्मुख प्रश्न है कि जनता जीवित कैसे रहे? प्रकृति की सबसे पहली चिन्ता होती है—जीवित रहना, बाकी तो सारा शृङ्गार है। पहले आत्म-रक्षा की चेष्टा होती है, फिर कला-प्रेम आदि शृङ्गार की बातें आती हैं। प्रेम को ले लीजिये। संसार में वह सबसे अच्छी चीज है। सन्तान के लिए माता का प्रेम सबसे अच्छा माना जाता है। पर जापान ने बर्मा पर जब बम फेंका या पाकिस्तान पर हमला हुआ, उस समय माताएँ संतान को छोड़ कर भारत में आयीं! अर्थात् उन्हें अपनी जान के लिए सन्तान से अधिक प्यार है।

गांधी की अहिंसा का विश्लेषण

आज घर-घर में मनुष्य की समस्याएँ होती हैं। उनमें मूल समस्या होती है—आत्म-रक्षा की। थोड़ी-बहुत पचड़ लगा कर काम करने की जो कोशिश की जाती है, उसे सुधार का काम कहते हैं। मानव के सामने आत्म-रक्षा की समस्या जब आती है, तब वह ज्यादा घबड़ाता है और क्रान्ति का विचार आगे आता है। गांधीजी ने कहा कि जमाना ऐसा आ गया है, जिसमें मनुष्य को अहिंसक समाज बनाना आवश्यक है। जैनी भाई अणुव्रत-आंदोलन चलाते हैं। लोग पूछते हैं कि प्राचीन काल से अहिंसा का आंदोलन चलता आ रहा है, फिर गांधी की अहिंसा में कौनसी नयी बात है? सबसे पहले आपको यह विचार करना है कि गांधी की अहिंसा और पुराने जमाने की अहिंसा में क्या कुछ अंतर है? पुराने जमाने में लोग कहते थे कि 'अहिंसा परमो धर्मः।'—याने परम धर्म अहिंसा है। लेकिन नित्य-धर्म तो हिंसा ही रहता था। उन दिनों नित्य-धर्म के रूप में हिंसा चल सकती थी, लेकिन परम-धर्म अहिंसा थी। बुद्ध और महावीर ने बताया कि नित्य-धर्म भी अहिंसा है। बीच के जमाने में सामाजिक जीवन में दूसरी मान्यता थी। सामाजिक जीवन में नित्य-धर्म अहिंसा और परम-धर्म हिंसा थी। याने समाज में लोग नित्य समस्या शांति से हल करते थे, लेकिन झगड़े की चरम सीमा पर अन्ततोगत्वा हिंसा की ही शरण लेते थे। गांधी ने इसमें परिवर्तन किया। उन्होंने कहा कि नित्य-धर्म भी अहिंसा और परम-धर्म भी अहिंसा। आज से ५० साल पहले यह बात दुनिया के सामने उन्होंने रख दी। अभी इंग्लैंड और फ्रांस ने स्वेज़ नहर के लिए मिस्र पर हमला किया। उसे शान्त करने के लिए सब दौड़ पड़े। आपके गाँव में जब कभी किसीके घर में आग लग जाती है, तब क्या कोई घर में बैठा रहता है? नहीं, हर आदमी घड़ा लेकर बुझाने के लिए दौड़ता है। लेकिन क्या वह सच्चा प्रेम है? सच्चा प्रेम होता, तो गाँव में किसी को भूखा देखते ही लोग थाली में खाना लेकर दौड़े होते। पुरानी दुनिया में, अगर कोई किसी पर हमला करता था, तो कोई नहीं दौड़ता था—अरे, मरने दो, हमारा क्या बिगड़ता है? लेकिन आज अगर कोई दूसरे पर हमला करता है, तो कोई नहीं कहता कि हमारा क्या बिगड़ता है। इसी तरह से आज दुनिया में कहीं अगर युद्ध छिड़ जाय, तो कोई दूसरा एक भी मुल्क उसके पक्ष में नहीं होता है।

प्रतिद्वंद्विता का निराकरण

आज दुनिया में हिंसा से यदि कोई समस्या का समाधान करने की कोशिश करे, तो क्या समस्या का समाधान हो जायगा? पता नहीं, होगा या नहीं, लेकिन जिनकी समस्या है या जिनके कारण हैं, उन दोनों का समस्या के साथ ही अन्त हो जायगा। यह हमने अब देख लिया। यह युग विज्ञान का है। इसलिए गांधी के सिवाय और किसीकी चलने वाली नहीं है, क्योंकि इस युग में इन्सान या तो हिंसा को चुने या तो विज्ञान को। सहअस्तित्व की बात चलती है। लोग साथ रहना चाहते हैं। अमेरिका और रूस, दोनों साथ रहने की बात करते हैं। विज्ञान और हिंसा साथ-साथ नहीं रह सकते। या तो मनुष्य विज्ञान को छोड़ कर पहले के लाठीवाले युग में जाय या हिंसा को छोड़ कर जीवन की समस्याओं का समाधान करे। अहिंसा को अपनाना इस युग की आवश्यकता है—स्वर्ग की सीट सुरक्षित करने के लिए नहीं, बल्कि इस दुनिया में जिन्दा रहने के लिए। आज जो अहिंसा है वह केवल व्यक्तिगत जीवन की नैतिक और आध्यात्मिक आवश्यकता ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन की राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक आवश्यकता है। यही एक नयी चीज गांधी ने बतायी।

यह हिंसा बन्द कैसे हो? यह तब बन्द होगी, जब हिंसा की जड़ को आप बन्द कर देंगे। इसलिए हिंसा की जड़ में क्या चीज है, वह समझनी चाहिए। पहली चीज है होड़बाजी—। हिंसा की जड़ है—प्रतिद्वन्द्विता। हजारों वर्षों से विद्वानों ने बताया है कि संघर्ष ही जीवन है और प्रतिद्वन्द्विता से ही प्रगति होती है।

[शेष पृष्ठ-संख्या ९ पर]

क्रान्ति-विज्ञान

(दादा धर्माधिकारी)

सशस्त्र क्रान्ति की अन्तिम प्रतिष्ठा, अन्तिम शक्ति कहाँ होती है ? शेक्सपियर का दूसरा रिचर्ड कहता है न—"Let our strong arms be our Conscience and our Sword our law."—'हमारी जो कलाई की ताकत है, यही हमारी सदसद्विवेक बुद्धि है और हमारी तलवार ही हमारा कानून है।' सशस्त्र युद्ध चाहे कैसा भी हो, अन्त में यहाँ आकर वह रुक जाता है। शस्त्र-शक्ति की श्रेष्ठता ही उसका मुख्य अधिष्ठान है।

शक्ति का अधिष्ठान कहाँ ?

रामदास स्वामी ने कहा, "भगवन्ताचे अधिष्ठान पाहिजे !"—भगवान् का अधिष्ठान हो ! लेकिन भगवान् का अधिष्ठान कहाँ हो, हृदय में हो ? और हाथ में तलवार हो ? मैंने कहा, "भगवान् काफी नहीं है ?" तो कहे, "नहीं, भगवान् के संरक्षण के लिए तलवार की जरूरत है।" तब तो तलवार ही बड़ी है, भगवान् तो बड़ा नहीं हुआ, और फिर जिसकी तलवार बड़ी हुई, वही भगवान् हो गया।

अग्रतश्चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः।

हिन्दू महासभा के जमाने में डॉ० मुंजे कहा करते थे कि "तुम गांधीवाले कुछ समझते भी हो ?"

"नहीं, इतना तो हम जानते हैं कि हम नहीं समझते हैं। आप समझाइये।"

तो कहा, "आगे-आगे वेद चलेगा और पीछे-पीछे धनुष-बाण चलेगा।"

"किसलिए ?"

तो कहा कि "वेद का संरक्षण करने के लिए धनुष-बाण की जरूरत है।"

हमने कहा, "तब तो वेद का प्रामाण्य ही खतम है। धनुष-बाण ही प्रमाण है, क्योंकि वेद तो धनुष-बाण की शरण आ गया।"

दूसरे ने कहा कि "एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान।" तो फिर कुरान बड़ा है या तलवार बड़ी है ?

तीसरे ने कहा कि "एक हाथ में क्रुसेड की गन—धर्म-युद्ध की तोप और दूसरे हाथ में बाइबिल।" तो बाइबिल का स्वत: कोई मूल्य ही नहीं !

चौथा कहता है कि "कमर में कृपाण और सिर पर ग्रंथसाहेब !" तो कृपाण की ताकत है।

अब हमारे सामने प्रश्न यह आ जाता है कि हम अंत में शक्ति का अधिष्ठान कहाँ मानते हैं। हम अपने आदर्श को श्रेष्ठ मानते हैं या बाहुबल को ? सशस्त्र क्रान्ति यहाँ आकर रुक जाती है, इसलिए सशस्त्र क्रान्ति जैसी अवैज्ञानिक और अव्यावहारिक प्रक्रिया संसार में आज दूसरी है ही नहीं। यह गांधी और मार्क्स का सवाल नहीं है। हमें तटस्थ होकर विचार करना है और सोचना है कि आज के जागतिक संदर्भ में कौनसी क्रान्ति वैज्ञानिक और व्यावहारिक हो सकती है।

भेद का निराकरण ही हमारी कसौटी

हमारी कसौटी क्या है ? हम भेद का निराकरण करना चाहते हैं, अभेद की ओर बढ़ना चाहते हैं। यही हमारी कसौटी है। इसके अनुरूप हमारी क्रान्ति की प्रक्रिया होनी चाहिए। गांधी ने कहा, "सहयोगात्मक प्रतिकार करो।" तब यह प्रश्न उठा कि क्या प्रतिकार भी सहयोगात्मक हो सकता है ? गांधी ने इसके लिए "हृदय-परिवर्तन" नाम दिया और हृदय-परिवर्तन की दो युक्तियाँ बतलायीं कि मनुष्य किस प्रकार से इसे सोचे।

"दूसरे की बीमारी को अपनी बीमारी समझो, उसकी सेवा करो।" "बीमारी में मैं शुश्रूषा करता हूँ, इसलिए कि 'तेरा' दुःख 'मेरा' दुःख है।" समाज और संसार आज यहाँ तक पहुँच गया है।

अज्ञानी के साथ हमें सहानुभूति है। "तेरा प्रश्न मेरा प्रश्न है। तेरा अज्ञान मेरा अज्ञान है। दोनों मिल कर उसका निराकरण करेंगे।" शिक्षण और विद्या के क्षेत्र में हम यहाँ तक पहुँच गये।

गांधी कहता है, "और एक कदम आगे बढ़ो। दूसरे के अपराधों को भी अपने अपराध मानो। तुम्हारी सहृदयता, तुम्हारा तादात्म्य दूसरों के साथ यहाँ तक हो। तुम्हें अपराध में सहयोग नहीं करना है, अपराध की क्षमा भी नहीं करनी है, लेकिन जिसने अपराध किया हो, उस अपराधी को another self, अपना दूसरा स्वरूप मान लेना है। "वह भी 'मैं हूँ', ऐसा मान लो।"

कोई सन्त ही ऐसा कर सकता था। यह करुणा की प्रक्रिया है। इस क्रान्ति में करुणा की यह प्रक्रिया क्यों है ? इतना व्यापक हृदय भगवान् ने केवल संत को ही दिया है कि वह पापी, अपराधी और अन्यायी के लिए भी अपने हृदय में करुणा रख सके। यह संत की ही भूमिका होती है।

लेनिन का अनुभव

लेनिन को बड़ा अच्छा अनुभव हुआ। क्रान्ति हुई। दो-चार साल के बाद जब पहली Economic Policy (आर्थिक नीति) आयी, तो लोगों ने पूछा कि तुम्हारी पहली योजना तो अच्छी थी, पर अब तुम्हारी यह जो नयी योजना है, उसमें समाजवाद कहीं दिखाई ही नहीं देता। उसने जवाब दिया, "हाँ, मैं जानता हूँ। इसमें समाजवाद नहीं है।"

लोगों ने पूछा, "तो तुम समाजवादी योजना क्यों नहीं बना रहे हो ?"

उसने जवाब दिया, "आज मेरी परिस्थिति नहीं है। वह संदर्भ नहीं है।"

लोगों ने चकित होकर कहा, "अरे ! समाजवाद के नाम पर तुमने क्रांति की और बहुसंख्य जनता ने समाजवादी क्रांति में, कम्युनिस्ट क्रांति में, तुम्हारा साथ दिया। फिर भी तुम कहते हो कि समाजवाद की स्थापना नहीं हो सकती ?"

लेनिन बोले, "They were my Comrades in revolution. But this does not mean that they were all Socialists. बहुसंख्य जनता क्रांति में शामिल होती है, पर इतने से वह साम्यवादी और समाजवादी नहीं बन जाती।"

"क्यों नहीं बन जाती ?"

उसने जवाब दिया, "क्रांति उनके स्वार्थों के अनुकूल होती है, इसलिए बहुसंख्य वर्ग क्रांतिकारी बन जाता है। प्रतिष्ठित वर्ग समाज-परिवर्तन नहीं चाहता। समाज में जो वर्ग विपन्न, दरिद्री और अप्रतिष्ठित होता है, वही समाज-परिवर्तन चाहता है।"

ब्राह्मण भला क्यों जाति-भेद का निराकरण चाहेगा ? उसका तो चरणोदक पीते हैं लोग ! चमार चाहता है जाति-निराकरण, क्योंकि ब्राह्मण के उसे जूते मारने पर भी उसे छूत लगती है ! मार्क्स ने आखिर यह क्यों कहा कि एक ही वर्ग का, श्रमजीवी किसान और मजदूरों का ही संगठन करूँगा। ऐसा उसने इसीलिए कहा कि जो गरीब, दरिद्र और अप्रतिष्ठित वर्ग होता है, उसकी भूमिका क्रांति के लिए अनुकूल होती है। गरीब गरीबी का निराकरण करना चाहता है, पर अमीर अमीरी का निराकरण करना नहीं चाहता। इसलिए गरीब का संगठन कर लो, क्योंकि उसका स्वार्थ क्रांति के अनुकूल है।

क्रान्ति कब सफल होती है ?

यहाँ हम यह भी समझ लें कि बहुजन का स्वार्थ बड़ा स्वार्थ है, वह निःस्वार्थ नहीं। स्वार्थ विशाल हो जाने से व्यापक नहीं बनता। सर्वोदय बहुसंख्यावाद नहीं है। सर्वोदय का संकल्प सबके उदय का है। केवल बहुसंख्या का स्वार्थ होने से ही वह निःस्वार्थ नहीं बन जाता। साम्यवादी घोषणा-पत्र में मार्क्स और एंगिल्स ने इस बात को स्पष्ट कर दिया है कि बहुजनों की क्रांति तभी सफल होती है, जब बहु-जनों का स्वार्थ और सर्व-जन का स्वार्थ एक हो जाता है, बहु-जन का स्वार्थ ही जब सर्व-जन का स्वार्थ हो जाता है, तब वह ऐतिहासिक परिस्थिति प्राप्त होती है, जिस परिस्थिति में क्रांति सफल होती है।

बहुजन के स्वार्थ और बहुजन के द्वेष पर भी जो क्रांति आधार रखेगी, उसके सामने हमेशा प्रति-क्रांति की बिभीषिका बनी रहेगी। आखिर प्रतिक्रांति का जन्म कहाँ से होता है ? प्रति-क्रांति के बीज कहाँ होते हैं, यह समझ लेना आवश्यक है।

लेनिन ने कहा कि किसान और मजदूरों के स्वार्थ के अनुकूल मेरी क्रांति थी, इसलिए किसान और मजदूर मेरे साथ आये, इतने से वे समाजवादी नहीं बन गये। स्वामित्व और संपत्ति की भावना का उनके मन में से निराकरण नहीं हुआ। उन्हें समाजवादी बनाने के लिए मुझे कुछ भावरूप प्रक्रियाओं का आश्रय लेना पड़ेगा। यह शिक्षण की प्रक्रिया है और दूसरी प्रक्रिया है, श्रमदान की।

लेनिन से पूछा गया, "तो समाजवादी योजना तुम्हारे पास नहीं है ?"

उसने कहा, "राज्य के कानून में नहीं है।"

"संविधान में है ?"

"संविधान में भी नहीं है।"

"तुम कहते हो कि कानून भी समाजवादी नहीं और संविधान भी समाजवादी नहीं बना सकते। तो फिर, तुम समाजवाद का विकास करोगे कैसे ?"

उसने कहा, "मेरी योजना में एक ही समाजवादी वस्तु है, उसका नाम है—Sabotnic। Sabotnic का अर्थ है, प्रति शनिवार को नागरिकों द्वारा स्वेच्छा से श्रमदान। इसी में से आगे चल कर काम की प्रेरणा का सवाल हल होने वाला

है। नागरिकों में स्वयंप्रेरणा और स्वयंकर्तृत्व, Incentive or Initiative दोनों, इस में जाग्रत होने वाले हैं।"

अपराध का प्रतिकार : अपराधी को क्षमा

हमारी मूल बात यह थी कि हमारी क्रान्ति की प्रक्रिया में जो प्रेरणा होगी, वह बहुजनों के स्वार्थों की भी न हो और द्वेष की भी न हो। क्रान्ति की प्रेरणा जब मानवीय प्रेरणा होगी, तभी वह क्रान्ति वैज्ञानिक हो सकती है, अन्यथा नहीं। मानवीय प्रेरणा सहानुभूति की प्रेरणा होती है, जिसे विनोबा ने "क्रान्ति की प्रेरणा" और गांधी ने "अहिंसा की प्रेरणा" कहा था। इसकी व्यक्तिगत भूमिका क्या है? यही कि दूसरे के अपराधों को अपना अपराध मान लेना। हम कहते हैं कि सन्त अपराध क्षमा करते हैं, लेकिन गांधी ने ऐसा नहीं कहा कि "Resist not evil"। उसने हमें बुराई का अप्रतिकार नहीं सिखाया।

गांधी ने कहा, "जैसे रोग हैं, जैसी बीमारियाँ हैं, वैसे ही अपराध हैं।" हम कहते हैं कि बीमारी का प्रतिकार करो, आग का प्रतिकार करो, ज्वालामुखी का विस्फोट हो, तो मनुष्यों को हटा लो। गांधी कहते हैं कि "मनुष्य के अन्दर की बुराई का भी प्रतिकार क्यों नहीं? मेरे अन्दर भी अपराध हैं, तो दूसरे के अपराध भी मेरे अपराध हैं, इसलिए दूसरे के और मेरे, सबके अपराधों का प्रतिकार करना है, निराकरण करना है।" दोषों, त्रुटियों और अपराधों की क्षमा नहीं होती, उनका प्रतिकार ही होना चाहिए। वह धर्म भी है, कर्तव्य भी है। अपराध का प्रतिकार करना है, पर अपराधी को क्षमा करना है।

हृदय-परिवर्तन की प्रक्रिया

गांधी और तिलक, दोनों ने गीता पर लिखा है। तिलक ने अपने प्रतिसहयोग के सिद्धान्त का आधारभूत श्लोक माना है–"ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम्" (४-११) 'जो जिस भाव से मेरे पास आता है, उसी भाव से मैं उसे प्राप्त होता हूँ, उसी भाव से उसके साथ पेश आता हूँ।' इसमें से तिलक ने सिद्धान्त निकाला—"शठं प्रति शाठ्यम्"। अर्थात् 'जो शठभाव से आपके पास आये, उससे आप शठ ही बनिये।' परन्तु ऐसे प्रसंग पर गांधी कहते हैं कि मनुष्य के लिए शुद्ध दया ही शुद्ध न्याय है।

क्यों? मैं जब कोई कार्य करता हूँ, तो मेरी भूमिका क्या होती है?

माँ के सामने खड़ा हूँ, तो माँ से कहता हूँ, "माँ, गलती तो हो गयी, अपने अंचल में मुझे छिपा ले, अपनी गोद में मुझे जगह दे। गलती फिर से न हो, ऐसी शक्ति दे। तेरा प्रेम होगा, तो उस गलती से शायद आगे चल कर बच जाऊँगा।"

इसी तरह हम भगवान् से कहते हैं, "भगवन्, अबकी दफा माफ करो। हे हरि, हमारी लाज रखो। हमारी गलती निभा लो!"

अर्थात् मनुष्य अपने लिए क्षमा चाहता है, दूसरे के लिए न्याय। गांधी कहता है—"हृदय-परिवर्तन में होगा अपने लिए न्याय और दूसरे के लिए क्षमा।" यह सहृदयता का, सहानुभूति का लक्षण है। दूसरे के दुःख का अनुभव करता हूँ, दूसरे के सुख का अनुभव करता हूँ, तो दूसरे के अपराधों का भी मैं अनुभव करता हूँ। याने अपराधी के लिए भी मेरे हृदय में सहानुभूति है। यह आधुनिकतम अपराध-चिकित्सा कहलाती है।

प्रश्न है कि समाज में से अपराध-निराकरण कैसे हो? आज का वैज्ञानिक कहता है कि अपराध-निराकरण की दो प्रक्रियाएँ हैं—(१) समाज में अपराध के लिए अवसर न रहे, ऐसी परिस्थिति समाज में पैदा की जाय और (२) अपराध का निराकरण हो, अपराधी का उद्धार हो।

गांधी : मार्क्स का उत्तराधिकारी

गांधी इससे सिर्फ एक कदम आगे बढ़ता है। अन्याय का निराकरण होगा, अन्याय का प्रतिकार होगा और अन्याय का उद्धार होगा। यह मानवीय प्रक्रिया है। अब इसे कोई अवैज्ञानिक कहे, तो अवैज्ञानिकता का आरोप सह लेने के लिए हम नम्र भाव से तैयार हैं। हमारे लिए मनुष्य विज्ञान से श्रेष्ठ है। यन्त्र बहुत बड़ा होगा, 'But science is greater than machine'.–यन्त्र से विज्ञान बड़ा है और 'Man is greater than his science'. और मनुष्य विज्ञान से बड़ा है। हमने मनुष्य को केन्द्र में मान लिया है। हम जो परीक्षण करेंगे, वह हमेशा अपने सामने मनुष्य को केन्द्र में रख कर करेंगे। इसलिए जब मैं यह कहता हूँ कि क्रान्ति की प्रक्रिया वैज्ञानिक है, वैज्ञानिक होनी चाहिए, तो विज्ञान की आज जहाँ तक प्रगति हुई है, उस प्रगति से लाभ उठा कर वैज्ञानिक क्रांति में भी हम आगे कदम बढ़ाते हैं। यह पीछे कदम नहीं है। लोग कहते हैं कि हम घड़ी की सुइयाँ पीछे तरफ ले जा रहे हैं। ऐसा नहीं। हम घड़ी की सुइयाँ आगे की तरफ ले जा रहे हैं। आज घड़ी की सुई जहाँ आकर रुक गयी है, वहाँ से आगे कोई सोच नहीं सकता था, वहाँ गांधी आया और मार्क्स का उत्तराधिकारी बन कर आया। मार्क्स ने सारे मानवीय तत्त्वों का संग्रह किया। लेकिन मार्क्स का विज्ञान उसके भौतिकवाद के सिद्धान्तों के कारण पूंजीवाद की प्रतिक्रिया के रूप में आया। इसलिए वह उस प्रतिक्रिया के साथ कुछ पूंजीवाद के स्वरूप को भी लेकर आया।

मार्क्स से मेरा मतलब है—दुनिया का विचार। मार्क्स एक संकेत है। दुनिया में क्रान्तिकारी विचार जिस मुकाम पर आकर पहुँचा है, उससे आगे अब क्रान्ति का विचार मानवीय विज्ञान की दृष्टि से हमको करना है और मानवीय विज्ञान की दृष्टि से एक ऐसी प्रक्रिया की खोज करनी है कि जिस प्रक्रिया में भेद का निराकरण हो, अभेद की स्थापना हो, पर भेद के निराकरण के साथ मानव का निराकरण न हो। अगर भेद के निराकरण के साथ, बुराई के निराकरण के साथ बुरे आदमी का ही निराकरण हो जाता है, तब तो वह निराकरण ही नहीं हुआ, वह तो अज्ञान के निराकरण के साथ विद्यार्थी का ही निराकरण हो गया। बीमारी के निराकरण के साथ रोगी का ही निराकरण हो गया! यह तो कोई प्रक्रिया नहीं हुई। प्रक्रिया ऐसी चाहिए कि जिस प्रक्रिया में मानव्य की रक्षा तत्वतः नहीं, वस्तुतः हो। केवल मानव्य की रक्षा नहीं, अपितु मानव्य का अधिष्ठान जो मानव है, उसका भी संरक्षण होना चाहिए।*

* अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, काशी द्वारा शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली "सर्वोदय-दर्शन" पुस्तक से।

ग्रामदान और तीन पुरुषार्थ

(विनोबा)

विज्ञान की प्रगति में एक-एक नयी चीज की खोज हुई है। एक-एक खोज में बहुत समय लगा है। खोज होने के बाद उस शक्ति का उपयोग सारे समाज के लिए करना होता है। समाज में शोध का उपभोग न हो; तो भी उस शक्ति की कीमत उससे कम नहीं होगी। बिजली अब पिछड़ गयी है। लेकिन आज भी हिंदुस्तान में बिजली का पूरा उपयोग नहीं होता। सूर्यनारायण की तरह बिजली का हरएक को उपयोग नहीं मिल रहा है। याने आज भी वह सामूहिक चीज नहीं बनी, लेकिन वह बन सकती है। इतने में अणु-शक्ति की खोज हुई। उसका उपयोग सारे समाज को करने की बात आयेगी। वह प्रयोग भी इस प्रकार से होना चाहिए कि उसका उपयोग सबको समान भाव से मिले। उसमें किसीका नुकसान न हो। सबका लाभ ही लाभ हो। यह एक स्वतंत्र पुरुषार्थ है। अणु-शक्ति की खोज एक स्वतंत्र पुरुषार्थ है। उसका समाज को उपयोग हो, यह एक दूसरा पुरुषार्थ है और उससे समाज को नुकसान न हो, बल्कि लाभ ही लाभ हो, यह एक तीसरा पुरुषार्थ है। तीनों प्रकार के पुरुषार्थों से विज्ञान की खोज का मानव-जाति में उपयोग होता है।

ग्रामदान की शक्ति की खोज

आध्यात्मिक क्षेत्र में और जीवन के क्षेत्र में भी यही वस्तु लागू होती है। अब यह कह सकते हैं कि हिंदुस्तान में ग्रामदान की शक्ति की खोज हो गयी। अब इसके आगे इस शक्ति का सारे समाज में उपयोग हो, व्यापक परिमाण में उपयोग हो, यह स्वतंत्र पुरुषार्थ होगा। उसमें से किसी प्रकार का नुकसान न हो, लाभ ही लाभ हो, यह तीसरे प्रकार का पुरुषार्थ होगा। अग्नि कल्याणकारी शक्ति है, परन्तु वह घर को आग भी लगा सकती है। शास्त्र में तो यहाँ तक लिखा है कि योग से भी नुकसान हो सकता है। जो अत्यन्त परम पुरुषार्थ माना जाता है, उससे भी नुकसान हो सकता है। ग्रामदान के विचार की खोज एक नयी शक्ति है और उससे नया जीवन बन सकता है। यह चीज सारे हिंदुस्तान में मालूम हो जाय, तो इस शक्ति की खोज हो गयी। फिर उसका सारे समाज में उपयोग करने, विनियोग करने, उसके अनुसार जीवन बनाने की बात दूसरे पुरुषार्थ में आती है। उससे कुछ नुकसान न हो, लाभ ही लाभ हो, वैसे "सेफ्टी वाल्व" लगाना, तीसरे प्रकार का पुरुषार्थ है।

गृहस्थाश्रम की योजना इसीलिए हुई कि लोगों में एक सामाजिक भावना पैदा हो और कुछ संयम का अनुभव हो। लेकिन उससे भी संकुचित भावना पैदा हो सकती है। संन्यासाश्रम से भी नुकसान हो सकता है। सामाजिक जीवन के स्वीकार से जैसे नुकसान हो सकता है, वैसे ही सामाजिक जीवन के तिरस्कार से भी नुकसान हो सकता है। गृहस्थ-जीवन में सामाजिक जीवन का स्वीकार है। इसके कारण

आसक्तियाँ पैदा होती हैं, इसीलिए संन्यासाश्रम हुआ। उसमें सामाजिक जीवन का परित्याग है। उससे भी नुकसान है, इसलिए संन्यास-आश्रम के साथ ईश्वरार्पण जोड़ दिया। याने वह त्याग के बदले अर्पण हो गया। इस तरह एक कल्पना की शुद्धि के लिए नयी-नयी पुश्तियाँ जोड़नी पड़ती हैं। ग्रामदान की बुनियाद पर ऐसा जीवन हो कि नुकसान न हो और लाभ ही लाभ हो, तो कई प्रकार की नयी योजनाएँ करनी होंगी।

गुण-दोष का विश्लेषण

मान लीजिये कि प्रत्येक गाँव अपना स्वतंत्र अभिमान रखने लगे तो संभव है कि अड़ोस-पड़ोस के गाँवों के बीच "क्लेश" उत्पन्न हो। इसलिए एक के बाद एक योजना हाथ में लेनी पड़ेगी। इसीलिए हम बार-बार कहते हैं कि ग्रामदान, भूदान और सर्वोदय के साथ-साथ विचार-प्रचार की विराट योजना होनी चाहिए। विचारों का मंथन होना चाहिए। कुछ दिन पहले बालासाहब खेर ने एक त्रैमासिक पत्र ("गांधी-मार्ग") शुरू किया था, तब उन्होंने मुझसे पूछा था कि उसमें भूदान के बारे में अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों ढंग से चर्चा की जाय, तो आपको कैसा लगेगा? हमने जवाब दिया था कि अनुकूल और प्रतिकूल दोनों प्रकार की चर्चा आवश्यक है। हमारे मन में क्षण भर के लिए भी ऐसा भाव नहीं रहा है कि अमुक विचार के खिलाफ विचार करने की जरूरत ही नहीं है। बुरी से बुरी चीजों में भी गुण होता है और अच्छी से अच्छी चीजों में भी दोष होता है। इसलिए गुण-दोष के विश्लेषण की चर्चा बहुत जरूरी है। हमारे विचार का विरोध भी लाभदायी है। हम चाहते हैं कि हमारे कार्यकर्ता इस तरफ ध्यान दें कि सारे भारत में विचार का प्रचार हो। वेद में सरस्वती का वर्णन है :

"सरस्वति त्वमस्माँ अविड्ढि
मरुत्वती धृषती जेषि शत्रून्।"

—हे सरस्वती, तू हिम्मत देने वाली, शत्रुओं को जीतने वाली देवी है। शत्रु याने गलत विचार। कोई गलत विचार पेश हो, वह खत्म हो जाय, तो शत्रु खत्म। वह काम सरस्वती का है। इसलिए हमने कहा है कि सरस्वती की मदद होनी चाहिए।

साहित्य-प्रचार

हम एक फिरके में, एक तालुके में काम कर रहे हैं, लेकिन विचारों का चिंतन सारे तमिलनाड का ही नहीं, बल्कि सारे भारत का, होना चाहिए। यहाँ हमें ग्रामदान मिलने लगे, तो हमने "तालुका-दान", "फिरका-दान" शब्द का उच्चारण किया। उसका ऐसा असर हुआ कि महाराष्ट्र में जहाँ तीन महीने पहले कुछ काम नहीं हुआ था, वहाँ एक पूरा का पूरा फिरकादान हो गया। शब्द में यह शक्ति होती है। कहाँ उसका उच्चारण होता है और कहाँ उसका अमल होता है! टॉल्स्टॉय और गांधीजी का पत्र-व्यवहार मशहूर है। टाल्स्टाय पृथ्वी के उत्तर में रहते थे और उन दिनों गांधीजी पृथ्वी के दक्षिण—दक्षिण अफ्रीका-में रहते थे। जो विचार टाल्स्टाय ने बताया, उसका अमल गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका में किया। विचार पैदा हुआ मास्को के नजदीक, अमल हुआ जोहान्सबर्ग के नजदीक। इस तरह विचार का प्रचार और परिणाम होता है। इसलिए हम साहित्य-प्रचार पर बार-बार जोर देते हैं। इधर जब कभी रामस्वामी (तमिल के प्रकाशन-संचालक) हमसे मिलते हैं, तो हम उनसे पूछते हैं कि प्रकाशन और प्रचार का काम कहाँ तक आया? दीपक जला कर उसे ढाँकना चाहते हो? तमिलनाड में पढ़े लिखे लोग ५० लाख हैं। किसी पुस्तक की लाख प्रतियाँ गयी, तो कहते हैं कि बहुत प्रचार हुआ। मुझे किसी भाई ने बताया कि यहाँ दो-तीन साल में किसी पुस्तक का दो तीन हजार का संस्करण खप जाय, तो वह चीज बहुत अच्छी गिनी जाती है! लेकिन यह बात सर्वोदय-विचार के लिए लागू नहीं हो सकती, क्योंकि सर्वोदय विचार सबके लिए है। सर्वोदय-साहित्य घर-घर पहुँचना चाहिए। इधर परिव्राजक गाँव-गाँव घूमें, उधर शहरों में सरस्वती की मदद से हमारा विचार पहुँचे। इस तरह दुहरा प्रचार हो, तब काम होगा।

शक्ति का उपयोग

शक्ति की खोज के बाद शक्ति के उपयोग का सवाल आता है और ऐसी वासना होती है कि खोज के बाद उसका उपयोग जल्द से जल्द होना चाहिए। हमने पढ़ा कि अब संभव है कि हम मंगल पर जा सकेंगे। इसलिए कुछ लोग सोच रहे हैं कि मंगल पर जमीन आदि पर मालकियत का हक "रिजर्व" कर लेना चाहिए! मनुष्य का दिमाग किस तरह चलता है, यह बताने के लिए यह एक विनोद की खबर है। वैसे ही जहाँ ग्रामदान की बात चलती है, वहाँ फौरन यह प्रश्न उठता है कि ग्रामदान के गाँव में क्या फर्क पड़ा? इसलिए अब पुरुषार्थ की जरूरत रहेगी और बहुत सोच-विचार कर काम करना पड़ेगा। गाँव की शक्ति बढ़े और गाँववाले ऊपर उठें, यह काम आसान नहीं है। इसमें हम लोगों की बुद्धिमत्ता का पूरा उपयोग होना चाहिए। मैंने कई दफा कहा है कि ग्रामदान में भिन्न-भिन्न प्रयोग होंगे। कोरापुट के ग्रामदान के गाँवों में कुछ काम हुआ है, परंतु वह सब लोगों को पसंद नहीं है। यह विचार इतना व्यापक है कि इसमें तरह-तरह के विचारों की गुंजाइश रहेगी। मतभेद को अवकाश देना पड़ेगा। कुछ सर्वसामान्य विचार तय करने होंगे। गाँव-गाँव में भिन्न-भिन्न प्रयोग होंगे। इसके चिंतन में सभी रचनात्मक कार्यकर्ताओं के दिमाग लगने चाहिए।

खादी और नयी तालीम में लगे हुए कार्यकर्ता ही निर्माण कार्यकर्ता नहीं हैं। सरकारी नौकर भी निर्माण-कार्य में ही लगे हुए हैं। करोड़ों किसान भी निर्माण-कार्य में लगे हुए हैं। किसान तो निर्माण-कार्य के पहले दर्जे के कार्यकर्ता हैं। उनके हिसाब से हम तो सिर्फ बोलने वाले हैं, करने वाले तो वे ही हैं। जिस कार्य में किसान की अक्ल लगी हुई है, उस कार्य की योजना में उन सबका सहयोग चाहिए। गाँव की समस्या के लिए वहीं के लोग ऐसी युक्ति सुझा सकेंगे, जो कि हमें नहीं सूझेगी। इसलिए इसमें हमें कोई शक नहीं है कि हमें इसमें यश ही मिलेगा, क्योंकि इसमें हजारों और लाखों लोगों का सहयोग मिलेगा।

संघात, चेतन और धृति

शुरू में दो प्रकार के कार्यकर्ताओं की जरूरत रहेगी। उसके बाद रचनात्मक कार्यकर्ताओं की। पहले प्रकार के कार्यकर्ताओं को हम चेतन कहेंगे। वे सबको प्रेरणा देंगे और ग्रामदान की तैयारी करेंगे। इस तरह हमारी एक चेतना की सेना रहेगी। हमारी दूसरी सेना होगी-धृति की। धृति याने टिके रहना। इसका काम यह होगा कि गाँववालों ने जो संकल्प किया, उस पर वे टिके रह सकें। उनकी सारी मुश्किलों के लिए हल सुझाने वाली हमारी यह दूसरी सेना रहेगी। तीसरे प्रकार के लोग होंगे—संघात। इस प्रकार सारे गाँव की कुल शक्ति इकट्ठी करके गाँव का निर्माण करना होगा।

ये तीनों शब्द मैंने गीता में से उठा लिये हैं। यह शरीर कैसे चलता है, उसका वर्णन गीता में लिखा है। शरीर में कई तत्त्व काम करते हैं। परंतु शरीर में सबसे बड़ा काम करने वाले तीन तत्त्व हैं: "संघातश्चेतनाधृतिः"—संघात, चेतन और धृति। हमारे जगन्नाथन्जी चेतना के कार्य में लगे हुए हैं। जी० रामचंद्रन्जी भी चेतना के काम में जोर लगा रहे हैं। चेतना तो केवल चाबुक का काम करती है। घोड़े की सवारी के लिए केवल चाबुक से काम नहीं बनता। घोड़े पर टिके रहना चाहिए और तब चाबुक चाहिए। इसीको धृति कहते हैं। चेतना से घोड़ा दौड़ने लगे, परंतु धृति न रहे, तो घोड़ा ऊपर आ जायगा और सवार नीचे चले जायगा! इसलिए चेतना के साथ-साथ धृति की भी योजना चाहिए। तीसरी बात है—निर्माण करने की। संघात-योजना होनी चाहिए।

शिक्षण की योजना हो

हमारे पास कार्यकर्ता 'इन' 'मीन' और 'तीन' (इने-गिने) हैं। इतनों से ही सब काम हमें करना है। हमें हार नहीं खानी है। एक बहुत बड़ा काम हमें फौरन करना होगा। तालीम देकर कार्यकर्ता निर्माण करने होंगे। कुमारप्पाजी इस बात को कहा ही करते हैं। हमारा भी उस तरफ ध्यान है। लेकिन हम जानते थे कि विचार की आवश्यकता निर्माण हुए बिना लोग इस ओर ध्यान नहीं देंगे। ग्रामदान के बाद यह बिलकुल स्पष्ट दीखता है कि कार्यकर्ताओं की जरूरत है। इसमें जैसे-तैसे कार्यकर्ता से काम नहीं चलेगा। अच्छे जानकार, हृदयवान, प्राणवान और बुद्धिवान कार्यकर्ता चाहिए। उसके लिए तीन महीने, छह महीने, एक साल, दो-चार साल इस तरह के अलग-अलग कार्यक्रमवाली शिक्षण की योजना करनी चाहिए। दो-तीन-चार प्रकार की तालीम की आवश्यकता रहेगी। छोटे कार्यकर्ताओं के लिए और बड़े कार्यकर्ताओं के लिए भी अलग-अलग तालीम की जरूरत रहेगी। यह नयी तालीम है। यह ऐसी चीज है कि जिसका हमारे हरएक काम में संबंध आता है।

(नेडुंकुलम्, मदुरा २५-३)

धन की लीला!

जो धन आवश्यकता-पूर्ति का साधन था, वही आज तो मनुष्य का प्राण बन गया है! न्याय-अन्याय, जायज-नाजायज, हक-बेहक—जैसे भी हो, जो कुछ भी करना पड़े, अपने शरीर की चमड़ी भी जाय, मानवता को पानी दे देना सह्य है, अबलाओं की लाज चली जाय, पर उन्हें तो चाहिए पैसा है! वे पैसे के लाल इतना भी नहीं सोचते कि उस पैसे से आखिर होगा क्या? धन के लिए प्रेमियों का प्रेम, स्नेहियों का स्नेह, सम्बन्धियों का सम्बन्ध, मित्रों की मित्रता सब समाप्त हो जाती है।

—आचार्य श्री तुलसी

भूदान-यज्ञ
१९ अप्रैल सन् १९५७

लोकनागरी लिपि *

नारायण को सर्वस्व-समर्पण ही सर्वोदय !

(वीनोबा)

ग्रामदान में कीसीका कोअी नुकसान नहीं है । अुसमें सर्वस्व नारायण को समर्पण करने की बात है । वह तो "नल्लम् तरुम् शोल्लु" है । यह सबकी भलाअी करने वाला शब्द है । आज तो हरेक कीसान को रात भर जागना पड़ता है, अीसलीअे की अपने पड़ोसी के बैल रात में खेत में आकर फसल न खा जायं । लोग अेक-दूसरे से डरते हैं, अेक-दूसरे को टालते हैं । परीणाम-स्वरूप गांव और जंगल में कोअी फर्क नहीं रहता । गांव के झगड़े शहर की अदालत में जाते हैं । वहां मुद्दत पर मुद्दत होती है । बार-बार वहां जाना पड़ता है । अीसके कारण गांव बर्बाद हो जाता है । अेक-दूसरे की पर्वाह नहीं करते हैं, अीसीके कारण यह सब होता है । हम सीर्फ अपने घर की ही फीक्र करते हैं । यहां तक की हम अपने लड़के को शौच करने के लीअे बैठायेंगे सामने वाले के घर के पास, तो हमारे सामने के घर वाला अपने लड़के को हमारे घर के पास बैठायेगा । मैं मेरा चार फीट का छोटा-सा आंगन साफ करूंगा, सामने वाला भी चार फीट का आंगन साफ करेगा । सारा कचरा बीच रास्ते में आ जायगा, जो की म्युनीसीपलीटी का रास्ता है । अब बीच रास्ते में कुछ गंदा पड़ा है, तो अुस पर मक्खीयां बैठेंगी और वे तो अपने घर में आयेंगी, क्योंकी अुनकी कीसी अेक चीज़ पर मालकीयत नहीं है, वे हमसे ज्यादा व्यापक हैं । फीर बीमारी फैलेगी और हम दुखी होंगे । अीस तरह समाज में अेक-दूसरे की पर्वाह नहीं करेंगे, तो कैसे चलेगा ? अीतनी सादी अक्ल नहीं रखते हैं ! पड़ोसी के घर में चेचक हुआ, तो तुम्हारे बच्चे को भी होने का संभव है । रात में कुत्ता भौंकेगा, तो तुम्हारी नींद खुलेगी, तुम्हारे पड़ोसी की भी खुलेगी । अेक गांव में रहते हो, तो अेक-दूसरे की तकलीफ तो सहन करनी ही पड़ेगी । कोअी मूर्ख सुलगी हुअी बीड़ी फेंक देता है और गांव को आग लगती है, तो अेक के कारण सारे गांव को सहन करना पड़ता है ।

अीस तरह जब अेक समाज में अड़ोस-पड़ोस में रहते हो, तो अेक-दूसरे की मदद की चींता तो करनी ही पड़ेगी । हम अेक गांव में रहते हैं, तो सारा गांव मील कर अेक परीवार बनाना ही होगा । हम नारायणम् के सेवक हैं और हमारा सब कुछ अुसको समर्पणम् है, यही "नल्लम तरुम् शोल्लु"—यही सर्वोदय है ।

(अमत्तुर, रामनाड, ३१-३)

* लिपि-संकेत : ि = ी ; ी = ी ; ख = ख ; संयुक्ताक्षर हलंत-चिह्न से ।

सर्वोदय की दृष्टि :

ऊपर वाले झुकें, नीचे वाले उठें

भारत ग्रामों का देश है । अस्सी प्रतिशत से अधिक जनता ग्रामों में ही निवास करती है । इसलिए भारत का सच्चा दर्शन ग्रामों में ही हो सकता है और होता है । विदेशों से भारत-भ्रमण के लिए जो लोग आते हैं, उनमें से अधिकतर लोग शहरों में ही घूम कर लौट जाते हैं । वे देहातों में जाने का न तो कष्ट ही करते हैं और न वहाँ जाने की कोई आवश्यकता ही महसूस करते हैं ! इसलिए यहाँ से लौटने के बाद वे भारत के सम्बन्ध में जो भावनाएँ व्यक्त करते हैं, उनमें सत्य का अंश कम ही रहता है ।

अभी हाल में ब्रिटेन के मजदूर-नेता श्री एन्यूरिन बेवन ने भारत आकर हमारे ग्रामों का आँखें खोल कर दर्शन किया । उन्होंने यह बात महसूस की कि सच्चा भारत तो ग्रामों में ही निवास करता है । तभी तो उस दिन श्रीनगर के सरकारी महिला-कॉलेज में छात्राओं को सम्बोधित करते हुए उन्होंने उनसे अपील की कि वे गाँवों में जाकर ग्रामवासियों की सेवा करें और उनका जीवन-स्तर ऊपर उठायें । कश्मीर-यात्रा के पूर्व दिल्ली में एक दिन उन्होंने सार्वजनिक सभा में भी ग्रामों की स्थिति का विवेचन करते हुए कहा था कि "आधुनिक समाज की केंद्रीय समस्या है—नगर और ग्राम्य समाज के बीच सुदृढ संबंध स्थापित करने की । यह आवश्यक नहीं है कि आज दूसरों की अपेक्षा अधिक चतुर और चालाक बन कर आधुनिक उत्पादन में वृद्धि की जाय । अभी जो कुछ कर रहे हैं, वह निश्चय ही आश्चर्यजनक है । यों तो सभी देश बड़े-बड़े शक्ति-केंद्र स्थापित करना चाहते हैं, किन्तु भारत एक नवीन समाज के निर्माण के लिए आगे बढ़ रहा है । अभी तक सामान्यतः संस्कृति का इतिहास केवल नगरों तक सीमित था और ग्राम्य क्षेत्र सांस्कृतिक दृष्टि से अविकासित ही रहे थे । प्रसन्नता की बात है कि भारत में ग्राम्य क्षेत्रों के समुचित विकास की ओर भरपूर ध्यान दिया जा रहा है ।"

श्री बेवन ने यह ठीक ही कहा है कि आज नागरिक जीवन और ग्रामीण जीवन के बीच संतुलन स्थापित करने की बहुत बड़ी जरूरत है और भारत इस विषय में आगे बढ़ रहा है । यह तो मानी हुई बात है कि देहात के रहने वाले किसानों और शहर के रहने वाले नागरिकों के बीच कम-से-कम अंतर होना चाहिए । गरीबों और अमीरों के बीच में अंतर जितना ही कम रहेगा, उतना ही देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा; किन्तु यह कोई बहुत आसान बात नहीं है । इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए एक ओर तो यह करना होगा कि जो लोग ऊपर हैं, वे नीचे उतरें और दूसरी ओर यह करना होगा कि जो लोग नीचे हैं, वे ऊपर चढ़ें । आज की समस्या यही है कि नीचे वाला भले ही ऊपर चढ़ने के लिए उत्सुक दिखायी पड़े, ऊपरवाला किसी भी तरह नीचे उतरना नहीं चाहता । हम जिस अहिंसक समाज की रचना करना चाहते हैं, उसका मूल उद्देश्य यही है कि समाज में सर्वत्र साम्ययोग की स्थापना हो । ग्रामीणों का जीवन-स्तर ऊपर उठाने की बात तो सभी लोग कहते हैं, सरकार की ओर से भी इसके लिए बड़ा ढिंढोरा पीटा जाता है; परंतु उसके लिए तो ग्रामीण जीवन का सारा नक्शा ही बदलना पड़ेगा । आज ग्रामों में जिस भयंकर गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, कलह, व्यसन आदि का दौरदौरा है, उसे मिटाये बिना और गाँवों को आर्थिक दृष्टि से स्वावलंबी बनाये बिना ग्रामीणों का स्तर ऊपर उठ नहीं सकता । इसके लिए भूमि की विषमता मिटाना सबसे पहला कदम हो सकता है । भूदान और ग्रामदान यही करने जा रहा है । हम जिस ग्रामराज की कल्पना करते हैं, उसमें न कोई अमीर रहेगा, न कोई गरीब; न कोई छूत रहेगा, न कोई अछूत, न कोई भूखा रहेगा, न कोई नंगा, न कोई शोषित रहेगा, न कोई शोषक । एक ओर हम इस प्रकार ग्रामीण समाज के दोषों का निराकरण करें और दूसरी ओर हम नगरों में रहने वाले लोगों का अपना स्तर नीचे ले जाने के लिए प्रेरित करें । संपत्तिदान, साधनदान नगर-निवासियों को इसी दिशा में प्रेरित कर रहा है । इस प्रकार के दोहरे हमले से ही साम्ययोग की स्थापना संभव है । केवल तभी नगर और ग्राम्य समाज के बीच सुदृढ़ सम्बन्ध स्थापित हो सकता है । नगरों और ग्रामों में जब तक वैषम्य बना रहेगा, तब तक न तो देश की गरीबी मिटने वाली है और न देश का उद्धार होना संभव है ।

काशी, १४-४-'५७ —श्रीकृष्णदत्त भट्ट

संरक्षण और सर्वोदय : १.

(सर्वोदय-नियोजन-समिति द्वारा स्वीकृत सर्वोदय-योजना का प्रतिरक्षा-संबंधी अध्याय।)

आज की परिस्थितियों में प्रतिरक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं के कारण अधिकांश राष्ट्रों के बजट में इस मद पर ही सबसे अधिक रकम दिखायी जाती है। यहाँ तक कि तटस्थ राष्ट्रों को भी, जिनका आतंक युद्ध से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है, विवश होकर अपने राजस्व का अनुपाततः अधिक भाग अपनी सैन्य-शक्ति को यथावत् कायम रखने एवं उसे बढ़ाने में लगाना पड़ता है। प्रायः सभी देशों से उनके मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहते हैं और किसी भी राष्ट्र की ओर से उन्हें आक्रमण की आशंका नहीं रहती। फिर भी देशी तथा विदेशी संकट से त्राण पाने के लिए उनके पास भी सशक्त सैन्य-दल बनाये रखने के सिवा दूसरा चारा नहीं रह जाता।

शस्त्रास्त्रों की संहारक शक्ति में जो अत्यधिक वृद्धि हुई है, उससे युद्धों के स्वरूप, कौशल और परिणाम में क्रान्तिकारी परिवर्तन हो गये हैं। आणविक और स्वचालित अस्त्रों के इस युग में आक्रमण और प्रतिरक्षा के परम्परागत ढंग आज अपर्याप्त एवं बेकार-से हो गये हैं। युद्धों के निर्णायक अस्त्र आज इतने व्यय-साध्य हो गये हैं कि आज कुछ ही राष्ट्रों में यह सामर्थ्य है कि वे उनकी सहायता से अपनी सेना सुसज्ज कर सकें, और इस पर भी वह सेना सफलतापूर्वक देश की प्रतिरक्षा कर सकेगी, इसमें सन्देह ही है। यही कारण है कि बहुत-से राष्ट्र मिल कर सामूहिक सुरक्षा की दृष्टि से क्षेत्रीय सैनिक-संघटनों का सहारा ले रहे हैं। बड़े-बड़े सबल और सशक्त राष्ट्र भी, जिनके पास इतने साधन हैं कि वे आज के युद्धों का सामना कर सकने योग्य सैन्य-शक्ति का संघटन कर लें, अपने को इस योग्य नहीं समझते कि युद्ध होने पर वे विजय प्राप्त कर ही लेंगे या उनके प्रतिरक्षा-साधन अभेद्य हैं। शस्त्रास्त्र-निर्माण की होड़ के इस जमाने में कोई भी राष्ट्र तब तक सन्तोष-लाभ नहीं कर पाता, जब तक कि वह भी निर्माण के इस कार्य में अपने को लगा नहीं लेता। आणविक अस्त्रों की सर्वसंहारकारिणी क्षमता तथा युद्ध में विजय-लाभ कर पाने की अनिश्चित अवस्था एवं विजयी होने पर भी बहुत कुछ हाथ न लग पाने के नैराश्यजन्य भाव ने सभी राष्ट्रों के मन में युद्ध और उसके परिणामों के प्रति एक प्रकार का भय पैदा कर दिया है। कोई भी ऐसे युद्ध में आज उतरने को तैयार नहीं है, जिसका परिणाम सर्वथा अनिश्चित हो। सभी राष्ट्र युद्ध से ऊबे-से हैं और इसीलिए सभी निरस्त्रीकरण के लिए लालायित हैं। लेकिन कोई भी राष्ट्र इस कार्य में अगुआ नहीं बनना चाहता। सभी यह कहते हैं कि यदि अन्य राष्ट्र सैन्य शक्ति घटायें, तो उसी अनुपात में हम भी कमी कर देंगे। यह दुश्चक्र इतना व्यापक है कि वैसे तो सभी राष्ट्र शान्ति की कामना करते हैं, किन्तु आकस्मिक स्थिति के लिए सभी तैयारी भी करते जाते हैं।

सर्वोदय को हिंसा में कोई निष्ठा नहीं है और इसीलिए युद्ध के प्रति भी कोई आस्था नहीं है। यह किसी भी रूप में हिंसा का विरोधी है, चाहे वह व्यक्तियों के जीवन में हो या राष्ट्रों के। सभी प्रकार के विवादों और समस्याओं के समाधान के लिए नैतिक आधार पर यह समझाने-बुझाने या अन्ततः सत्याग्रह के मार्ग का अवलम्बन ही उचित समझता है। यह इस बात को बिलकुल नहीं मानता कि युद्धों से समस्याओं का समाधान हो सकता है, अतः यह चाहता है कि सभी राष्ट्र शान्ति का रास्ता अख्तियार करें, जिससे विवादग्रस्त प्रश्न भलीभाँति सुलझाये जा सकें। जिस शान्ति की यह कल्पना करता है, वह सैन्य-शक्ति के भरोसे प्राप्त की गयी शान्ति नहीं है, जिसके चलते विरोधी राष्ट्र भय के कारण शान्त बने रहने को विवश होते हैं। इसका विश्वास ही इस बात में नहीं है कि परस्पर एक-दूसरे को भयाक्रान्त करके उन्हें आक्रमण से विरत किया जा सकता है। इसकी तो मान्यता यह है कि युद्ध तभी समाप्त किया जा सकता है, जब कि सब राष्ट्र शुद्ध भाव से यह मान लें कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान का तरीका युद्ध नहीं है। यदि युद्ध का अन्त करना है, तो सभी राष्ट्रों को निरस्त्रीकरण की विधि अपनानी होगी, किन्तु यदि प्रत्येक राष्ट्र यह सोचने लगे कि निरस्त्रीकरण तभी सम्भव है, जब कि सब राष्ट्र इसके लिए तैयार हों, तो निरस्त्रीकरण कभी न हो पायेगा। किसी-न-किसीको तो अगुआ बनना ही होगा, जिसमें दूसरों के लिए भी रास्ता खुले। निरस्त्रीकरण के मामले में इस समय जो गतिरोध की अवस्था है, वह तब तक दूर नहीं हो सकती, जब तक कि कोई एक राष्ट्र साहस करके आगे नहीं बढ़ता और दूसरों के लिए उदाहरण नहीं उपस्थित करता। अहिंसा में विश्वास करने वाला तब तक चुप नहीं बैठा रहता, जब तक कि उसका प्रतिपक्षी भी अहिंसा का भाव अपना नहीं लेता। प्रतिपक्षी में हिंसा का भाव रहते हुए भी वह अपनी अहिंसक शक्ति से काम लेता है। यदि मानव-समाज को युद्धों से बचाना है, तो राष्ट्रों को भी यही तरीका अपनाना होगा। सत्याग्रह के सब ढंग तभी कारगर हो सकते हैं, जब कि एकाकी होने पर भी सत्याग्रही दृढ़ निश्चय और निष्ठापूर्वक सत्य और अहिंसा को अपना लें। सर्वोदय के प्रति निष्ठा और विश्वास रखने वालों को भी अपना कर्तव्य समझ कर अपने-अपने राष्ट्रजनों को यह बात बतानी होगी कि युद्ध दूर करने का तरीका यही है कि वे लोग निरस्त्रीकरण की ओर बढ़ने के लिए अपूर्व साहस दिखायें।

(१) शान्ति विषयक भारतीयों की निष्ठा परम्परा से ऐतिहासिक और अखण्ड है। इस परम्परा की नवीनतम अभिव्यक्ति स्वातन्त्र्य-प्राप्ति के प्रसंग में अहिंसात्मक आन्दोलन के रूप में गान्धीजी द्वारा प्रेरित और विकसित हुई। यह आन्दोलन राष्ट्रीय जीवन में शान्ति-मार्ग सम्बन्धी सम्भावनाओं को व्यक्त करने में ही सफल नहीं हुआ, वरन् इस निष्ठा को व्यावहारिक रूप देने के कौशल को विकसित करने में भी सफल हुआ। भारत का यह कर्तव्य है कि निष्ठा की यह बात और उसे व्यावहारिक रूप देने का यह कौशल संसार भर में फैलाये और एकांगी ही सही, निरस्त्रीकरण का कार्यक्रम अपनाने की नीति पर चले। भारत जितनी ही शीघ्रता से इस काम में हाथ लगायेगा, उतनी ही उसके लिए तथा संसार के लिए लाभ की बात होगी।

(२) राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय समाज में आज जो संघर्षमूलक प्रवृत्तियाँ व्याप्त हैं, उनका कारण जीवन विषयक दोषपूर्ण मान्यताएँ हैं। अतः निरस्त्रीकरण की बात सफल बनाने के लिए तथा युद्ध के निवारण के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय जीवन-प्रणाली के आधार में क्रान्तिकारी परिवर्तन किये जायँ। आज प्रत्येक राष्ट्र अपने हितों के सम्बन्ध में इस संकीर्ण बुद्धि से विचार करता है कि दूसरे राष्ट्रों के हितों पर उसका ध्यान ही नहीं जाता। सर्वोदय की दृष्टि यह है कि व्यक्ति-व्यक्ति अथवा राष्ट्र-राष्ट्र के हितों में संघर्ष के लिए कोई स्थान ही नहीं है। जिस प्रकार शान्ति और स्वतन्त्रता अविभाज्य है, वैसे ही सबके हित भी अविभाज्य हैं। हितों में संघर्ष की बात ही नहीं उठती। आज जिसे राष्ट्रीयहित समझा जाता है, वही कल दोष हो सकता है, यदि उसके चलते दूसरे राष्ट्रों के हितों से संघर्ष की नौबत आये। इसलिए यह आवश्यक है कि संसार के लोग इस बात का विचार करें कि आज विभिन्न राष्ट्रों के जो हित परस्पर टकराते दिखायी देते हैं, उनसे अन्ततः किसी भी राष्ट्र का वास्तविक हित नहीं हो सकता। संसार में शान्ति तभी हो सकती है, जब विश्व-समाज के हित को आज के संकीर्ण राष्ट्रीय हित के ऊपर समझा जाय। अतः विश्व-शांति के लिए आवश्यक है कि सबके हितों को समन्वित किया जाय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन-पद्धति का निर्माण किया जाय, जिसमें विभिन्न राष्ट्र पृथक्-पृथक् रूप से अपने ही हितों की बात न सोचें वरन् दूसरों के हितों पर भी उनका ध्यान रहे और परस्पर एक-दूसरे का हित करने के लिए त्याग करने को भी तत्पर रहें। (क्रमशः)

मातृभूमि का स्वरूप

मातृभूमि का यथार्थ स्वरूप गाँवों में ही है; यहीं पर प्राणों का निकेतन है, लक्ष्मी यहीं पर अपना आसन ढूँढ़ती है। वही आसन अनेक दिनों से प्रस्तुत नहीं हुआ। धनपति कुबेर ने देश के लोगों के मन को शहरों की यक्षपुरी की तरफ खींचा है। श्री को उसके अन्न-क्षेत्र में आवाहन करना हम लोग बहुत दिनों से भूले हुए हैं। इसके साथ ही साथ देश से सौंदर्य गया, स्वास्थ्य गया, विद्या गयी, आनंद गया, प्राण भी बहुत अल्प ही अवशिष्ट है। आज गाँवों के जलाशय शुष्क, वायु दूषित, पथ दुर्गम, भंडार शून्य, समाज-बंधन शिथिल हैं, ईर्ष्या, कलह, कदाचार बस्ती की जीर्णता को प्रतिक्षण जीर्णतर कर रहे हैं। और अधिक समय नहीं है। श्रीहीन अनाहत देश में यमराज का शासन दिन-दिन रुद्रमूर्ति धारण करके प्रबल हो रहा है।

आज जिन लोगों ने जीवधात्री गाँव की भूमि के रिक्त स्तनों में स्तन्य या दूध संचार करने का व्रत लिया है, जो उसके निरानंद अंधकार घर में प्रकाश लाने के लिए प्रदीप जला रहे हैं, मंगलदाता विधाता उनके प्रति प्रसन्न हों! त्याग के द्वारा, तपस्या के द्वारा, सेवा द्वारा, परस्पर मैत्री-बंधन द्वारा, बिखरी हुई शक्ति के एकत्र समवाय द्वारा, भारतवासियों की बहुकाल से संचित मूढ़ता और औदासीन्य जनित अपराध-राशि के साथ-साथ रुष्ट देवता के अभिशाप को वे साधक लोग देश से तिरस्कृत करें, यही मैं एक मन से कामना करता हूँ।

('समवाय नीति' की भूमिका से, अनु० मदनलाल जैन)

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कोरापुट का गरंडा ग्राम : नवनिर्माण के पथ पर

['भूदान-यज्ञ' के ता २९ मार्च और ५ अप्रैल के अंकों में श्री गोविंद रेड्डीजी ने कोरापुट के खेती के अनुभव विस्तार से दिये ही हैं, अतः निम्न पत्र से उतनी जानकारी हटा कर आवश्यक जानकारी दी जा रही है।—सं०]

कोरापुट की सर्व-सेवा-संघ की बैठक के बाद हम लोग श्री रेड्डीजी का केंद्र-गरंडा गाँव, जो रायगडा से करीब ६५ मील पर है, देखने गये। गरंडा ३१ घरों की बस्ती है, जिनमें हरिजनों के ६-७ घर थोड़ी दूरी पर हैं। सारे घर आमने-सामने दो पंक्तियों में बसाये गये। बीच में खुला आँगन है। श्री रेड्डीजी अपनी कुटिया के बरामदे में बैठे-बैठे गाँव का निरीक्षण कर सकते हैं। उन्होंने एक कोमटी के खाली पड़े हुए घर को ही अपनी कुटिया बना ली। सारे घर लाल, सफेद मिट्टी से सुंदर ढंग से लिपे-पुते हैं। एक घर के बरामदे में बैठते ही इधर-उधर सब दिखायी देता है। केवल बीच के मकान की दीवार ही बीच में होती है। पीछे का सब हिस्सा खुला है। सबके आँगन में कुंदरू का लता-मंडप है। उसमें केले-संतरे भी लगे हैं। पशुओं की रखने की जगह भी पीछे ही है। घरों में कहीं ताला-कुंजी नहीं है। श्री रेड्डीजी की कुटिया को तो बंद दरवाजा तक नहीं! सब कुछ गाँववालों के भरोसे! श्री रेड्डीजी के घर में प्रवेश करते ही संतोष-सा लगा। धीरे-धीरे देखने पर तो लगा, जैसे आश्रम में ही आये हैं। संडास, मुत्री-घर, कचरा डालने की जगह आदि व्यवस्थित हैं। आँगन में दो संत्रे के पेड़ हैं। एक कुंदरू का लता-मंडप बना है। उसीके नीचे रसोई बनती है, भोजन होता है।

श्री रेड्डीजी के आने के पहले यहाँ दो बहनें रहती थीं। उनसे कुछ संस्कार गाँववालों को मिला था। पू० बाबा का दो दिन का पड़ाव यहीं था। 'गांधी-घर' बन रहा है। सरकारी दूकान, तेलघानी आदि के लिए एक बड़ा मकान बन रहा है। गाँव के लोग ही यहाँ का सब काम करते हैं। टिन व सिमेंट छोड़ कर सारी सामग्री यहीं की है।

गाँव से सट कर ही कुछ दूरी पर पहाड़ियों के बीच खेती है, जंगली पेड़ भी बहुत हैं। गाँववाले जैसे-तैसे खेती करते थे, लेकिन श्री रेड्डीजी ने सारा नक्शा ही बदल दिया है। पहले तो लोगों को गाँव का यह सुधार पसंद नहीं आया। श्री रेड्डीजी को मारने तक को तैयार थे! गालियाँ देते थे, लेकिन अब श्री रेड्डीजी के साथ एकदम तन्मय हो गये हैं। सिंचाई की कुल खेती १७ एकड़ अभी तैयार की है। इसमें से ७ एकड़ सामूहिक हैं। १० एकड़ बँट गयी है। १७ एकड़ के ही सुंदर ढंग से १७० समान आकार के प्लॉट बनाये हैं। गाँववाले खूब उत्साह से काम में लगे हैं। अपना प्लॉट तो तैयार करना ही है, इसके अलावा सामूहिक प्लॉट भी दो-दो घरों के बीच बाँट दिया है। अनाज घर में आने तक की सारी फिकर घरवाले करते हैं। सामूहिक उत्पादन में से गाँव की भलाई के काम होंगे। खेती में पानी की व्यवस्था भी की है। गाँव के पास जंगली नाले को रोक कर बने एक पुराने तालाब को श्री रेड्डीजी ने ठीक और बड़ा कर लिया है। उसी तालाब की दो-तीन नालियाँ खेतों के बीच में से जायेंगी। इसीसे दो फसलें तो लेंगे ही।

गाँव के बाहर दो कतारों में हर घर के लिए एक गड्ढा बना लिया है। घर का, आँगन का, मवेशियों का गोबर आदि सारा कचरा उसमें ले जाकर डालते हैं। गाँव में कहीं भी आपको इधर-उधर कचरा नहीं दिखायी देगा। कहने-बोलने की आवश्यकता तक नहीं। बहनें अपने-आप सूपड़े में सारा कचरा भर कर डाल आती हैं—इतना व्यवस्थित संस्कार मिल गया है। खाद के लाभ भी उनके ध्यान में आ गये हैं। खाद बनाने के लिए गड्ढा भरने के बाद मिट्टी से ढाँक देना, पानी डालना आदि सब वे जान गये हैं। इस साल ग्रामदानी खेती में गाँव को तिगुनी फसल हुई है, चौगुनी करने की उम्मीद रखते हैं। इससे उत्साह खूब बढ़ा है। सुबह उठे कि चले खेत की तरफ! एक दिन मैं सुबह-सुबह खेतों की तरफ गयी। देखती हूँ कि वहाँ २०-२५ बैल-भैंसों की जोड़ियाँ प्लॉट बनाने के लिए जमीन समतल करने का काम जोरों से कर रही हैं। मिट्टी इधर से उधर बड़ी चतुराई से डाल रहे हैं। कल मैंने टीला देखा था, वह आज समतल हो गया था। कितना उत्साह! यह सारी खेती ठीक होने के बाद और भी कुछ झाड़ आदि निकाल कर खेती बढ़ायेंगे। नारियल का बगीचा लगाया है। काजू, चिकू का भी बगीचा लगायेंगे।

गाँव में आचार-विचार एकदम बदल ही गये हैं। काम करते समय या श्री रेड्डीजी के सामने कोई भी बीड़ी पीते नहीं दिखायी देगा। श्री रेड्डीजी के सामने कोई थूकते भी दिखायी नहीं देगा। शराब कम हो गयी है। श्री रेड्डीजी नकद पैसा कम ही देते हैं। जरूरत की चीजें ही मजदूरी में देते हैं। लेकिन अब उन्हें विश्वास हो गया है कि गाँववाले फिजूल खर्च नहीं करेंगे। कभी-कभी जरूरत से नकदी भी दे देते हैं। केवल २-३ भाई ऐसे हैं, जिनका ख्याल रखना पड़ता है। सब नहाते हैं, स्वच्छ रहते हैं। घर साफ-सुथरा रखते हैं। श्री रेड्डीजी का मकान स्त्री-पुरुष, बाल-बच्चे सबके लिए खुला दरबार है! लोग हर मामले में उनसे चर्चा करते हैं। श्री रेड्डीजी भी उनकी सलाह से, उनके उत्साह से ही आगे कदम बढ़ाते हैं। गाँववालों को हजम हो सके, उतना ही काम उठाते हैं।

शाम की प्रार्थना में बाल-बच्चे, भाई-बहनें काफी आते हैं। प्रार्थना के उच्चार स्पष्ट, शुद्ध करते हैं। वहीं के दो-तीन भाई श्री रेड्डीजी की सहायता से सारे काम की देख-भाल करते हैं।

श्री रेड्डीजी को यही एक गाँव दिया गया था। लेकिन उन्होंने ५-७ मील में बसे ७ गाँव ग्राम-सुधार, खेती-सुधार में ले लिये हैं। पाँच मील पर सेवाग्राम-कस्तूरबा-अस्पताल की कमला बहन बैठी हैं। वहाँ भी श्री रेड्डीजी तालाब बना रहे हैं। दूसरा एक गाँव साढ़े तीन मील पर है। वहाँ उड़ीसा की दो बहनें रहती हैं। वहाँ श्री रेड्डीजी करीब दो हजार फूट लंबी नहर खुदवा रहे हैं। पूरी होने आयी है। गाँव के पास खेतों तक आ जायेगी। श्री रेड्डीजी कहते थे कि पाँच-छह सौ मील दूर के पहाड़ों-जंगलों से बहता हुआ पानी आता है। एक दिन वे पानी की तलाश में घूम रहे थे कि कहीं जोरसे पानी गिरने की आवाज आयी और इस नाले का पता चला! इसी नाले के पानी को मोड़ लिया है। यही श्री रेड्डीजी का स्मारक रहेगा। सब कामों की योजनाओं, नाप आदि में श्री रेड्डीजी की ही इंजीनियरी चलती है। वैसे वे खेती के बारे में गहरे चिंतनशील हैं। एक बीज से कितने दाने हुए, इसका सारा लिखित विवरण सेवाग्राम में तो है ही, यहाँ भी तैयार हो गया है। बीज किस दिन बोया, कब कितने दिन बाद अंकुर फूटा, कब दो पत्ते हुए आदि तारीखवार हिसाब है। कुंदरू की लता में आज तक कितने फल लगे आदि का हिसाब रखते हैं। दिन-रात काम में रहते हैं। वेश-भूषा और रंग-रूप में एकदम आदिवासी लगते हैं। कामचलाऊ तेलगू बेखटके बोल लेते हैं। इधर कुछ गाँवों में तेलगू भाषा चलती है। अभी उनका ध्यान खेती और सिंचाई की तरफ है। धीरे-धीरे चरखा, पढ़ाई आदि में भी रुचि बढ़ायेंगे। इस ग्राम को देख कर लगा कि कोरापुट आना सफल हुआ।

(मद्रास, ता० ३०-३ के पत्र से)

कालड़ी : जहाँ सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है

(एस० व्ही० गोविन्दन्)

सन् सत्तावन का सर्वोदय-सम्मेलन कालड़ी में होने जा रहा है। पूर्णा नदी के के तट पर बसा हुआ आदि शंकराचार्य का यह जन्मस्थान आज नयी भाषावार प्रान्त-रचना के अनुसार केरल के त्रिचुर जिले में पड़ता है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में इसका एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

आवागमन के मार्ग

उत्तर भारत के यात्री मद्रास-सेंट्रल स्टेशन से 'कोचीन-एक्सप्रेस' में बैठें, तो 'आलुवाय' (Alwaye) पहुँचेंगे। 'आलुवाय' से १० मील मोटर में बैठ कर कालड़ी पहुँच सकते हैं। इसके लिए एक नदी पार करनी पड़ेगी, जिसके लिए नाव आदि की उपयुक्त व्यवस्था है। 'आलुवाय' के बदले 'त्रिचुर' में उतर कर वहाँ से सीधे मोटर में बैठ कर भी कालड़ी पहुँच सकते हैं। तब फिर नदी नहीं पार करनी पड़ेगी। त्रिचुर से कालड़ी ३० मील पर है। कालड़ी के पास "अंगमाली" नामक एक रेलवे-स्टेशन है। अकसर वहाँ ट्रेन नहीं ठहरती, लेकिन संमेलन के अवसर पर मेल-गाड़ियाँ भी ठहरेंगी। अंगमाली से कालड़ी सिर्फ ४-५ मील है। वहाँ के लिए मोटर भी मिलती है।

मद्रास से त्रिवेंद्रम होकर आने वालों को कुछ कठिनाई होगी। समय और पैसे भी अधिक लगेंगे। लेकिन रामेश्वरम्, मदुराई, श्रीरंगं, पांडिचेरी, कन्याकुमारी आदि महत्त्वपूर्ण स्थान देखने में सुविधा होगी। ये सब स्थान करीब-करीब रास्ते पर पड़ेंगे। फिर त्रिवेंद्रम से कोटयम तक मोटर में यात्रा करनी पड़ेगी। कोटयम से अंगमाली आ सकते हैं। 'त्रिवेंद्रम' से सीधे 'आलुवाय' तक भी मोटर मिलती है। आलुवाय से कालड़ी के लिए दूसरी मोटर मिलेगी।

बंबई से या मद्रास से समुद्री जहाज से आने वाले 'कोचीन बंदरगाह' में उतर कर मोटर या रेल के द्वारा कालड़ी पहुँच सकते हैं। मैसूर के यात्री कोझिकोड (Kozhikode) तक मोटर से आयेंगे। वहाँ से अंगमाली तक रेलगाड़ी और फिर

मोटर से कालड़ी पहुँचेंगे। मद्रास सेंट्रल से 'मंगलूर-मेल' में आवें, तो शोरनूर-जंक्शन में गाड़ी बदल कर कोचीन की गाड़ी में बैठना होगा। कालीकट से आने वाले यदि कोचीन गाड़ी में न बैठे हों, तो शोरनूर में गाड़ी बदल सकते हैं। कालड़ी से २० मील दूरी पर कोचीन का हवाई अड्डा भी है।

जगद्गुरु शंकराचार्य का स्थान

शंकराचार्य का आयुष्य-काल आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और नौवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में (सन् ७८५ से ८२०) माना जाता है। मलयाळम में वर्ष की गणना तभी से शुरू हुई है। उस युग में कोल्लम के राजा शंकराचार्य के जन्मदिन से ही गद्दी पर बैठे, इसलिए मलयाळम-वर्ष को "कोल्लम्" (साल=कोल्लं) नाम पड़ा।

शंकराचार्य ने बत्तीस साल की अपनी छोटी आयु में वेदांत का केवल अध्ययन ही नहीं किया, वेदाचार्य भी बन गये। उन्होंने कई महान् ग्रंथ लिखे। सारे भारत की ३-४ बार यात्रा की और भारत के चारों कोनों में चार बड़े मठों की स्थापना की। शंकराचार्य ब्रह्मचर्य के बाद सीधे संन्यास लेना चाहते थे। लेकिन माँ अनुमति नहीं देती थी। एक दिन शंकराचार्य पूर्णा (पेरियार) नदी में स्नान कर रहे थे। इतने में एक मगर ने उन्हें पकड़ा। माँ किनारे पर थीं। शंकराचार्य ने कहा—"माँ, मुझे संन्यास लेने दो, नहीं तो मगर मुझे नहीं छोड़ेगा।" माँ ने तुरंत अनुमति दे दी। इस घटना की याद दिलाने वाला घाट आज भी जैसा का तैसा बना है। उसी घाट के निकट शंकराचार्य ने एक मंदिर बना कर श्रीकृष्ण की प्रतिष्ठा की।

अद्वैतवादी शंकराचार्य को कालड़ी के ब्राह्मणों ने जातिभ्रष्ट माना, इसलिए अपनी माँ के शव को जलाने का काम अकेले शंकराचार्य ने किया। शव वे अकेले उठा नहीं सकते थे, इसलिए उन्होंने उसके तीन टुकड़े किये और एक-एक ले जाकर चिता में डाल दिया! पीपल का एक पुराना पेड़ अब भी उस नदी के तट पर इसका साक्षी है। उसके आसपास एक चबूतरा है, जहाँ आज भी प्रतिदिन शाम को दीपक जलता है। कालड़ी में शंकराचार्य जहाँ रहते थे, वहाँ त्रावणकोर के दीवान बहादुर ने २५ एकड़ जमीन खरीद ली और दो मंदिर बनवाये—एक शंकराचार्य का मंदिर है, दूसरा सरस्वती-मंदिर है। ये दोनों मंदिर अष्टपद्माकार हैं। सन् १९१० में कुंभमास की शुक्ल-द्वादशी को इन मंदिरों की प्राणप्रतिष्ठा स्वामी नरसिंह भारती के हाथ से हुई, जो मैसूर शृंगेरी मठ के बत्तीसवें आचार्य माने जाते हैं।

धूपकाल में नदी सूखी रहती है। परंतु शंकराचार्य के मंदिर के पास दक्षिणी तट पर हमेशा पानी बहता है। जल ५-६ फुट गहरा रहता है। वर्षाकाल में नदी भरी रहती है और लगता है कि मानो ३० मील का समुद्र इस मंदिर के दर्शन के लिए दौड़ आया है! कालड़ी से उत्तर में करीब १ मील दूर "माणिक्क मंगलम्" गाँव में एक मंदिर है, जहाँ शंकराचार्य के पिताजी शिवगुरु पूजा कर रहे थे। कहा जाता है कि शिवगुरु तीर्थयात्रा के लिए चितंबरं (तमिलनाड) गये। वहाँ स्वप्न में उन्हें भगवान् का दर्शन हुआ और कहा गया कि मैं तुम्हारे पुत्र के रूप में अवतार लूंगा। शंकराचार्य के जन्म के अवसर पर पिताजी रुद्राभिषेक कर रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम 'शंकर' रखा।

कालड़ी में और एक दर्शनीय स्थल है, जो शंकराचार्य के मंदिर के रास्ते पर ही पड़ता है। वह है-श्रीराम कृष्ण अद्वैताश्रम। कालड़ी से करीब एक मील उत्तर-पश्चिम कोने में 'माट्टूर' नामक एक गाँव है। यहाँ ४-५ साल से एक डिग्री-कॉलेज चल रहा है। संमेलन इसी स्थान पर होगा। आशा है, शंकराचार्य की इस भूमि से भूदान और ग्रामदान-आंदोलन को एक नया विचार जरूर मिलेगा।

त्रिविध क्रांति की आवश्यकता : धीरेन्द्र मजूमदार

(पृष्ठ २ का शेष)

लोगों ने भी मान रखा है कि समाज की प्रगति प्रतिद्वंद्विता से ही हो सकती है। समाज में उन्नति कौन नहीं चाहता? मानव उन्नति करना चाहता है और बिना प्रतिद्वंद्विता के प्रगति नहीं होगी, ऐसा माना गया है। यह जो दर्शन है, इसीको बदलना होगा। जब तक प्रतिद्वन्द्विता रहेगी, तब तक हिंसा चलेगी। आपको समझना चाहिए कि अगर समाज के अन्दर से हिंसा को निकालना है और इस विज्ञानी युग में यह आवश्यक है, तो समाज से होड़ की भावना निकालनी होगी। अर्थात् संघर्ष ही जीवन है और प्रतिद्वन्द्विता ही उन्नति का मूल मंत्र है, इस मान्यता को ही छोड़ना होगा।

यह प्रतिद्वन्द्विता किस चीज के जरिये आती है? एक है, सत्ता और दूसरी है, संपत्ति। सत्ता प्रतिद्वन्द्विता की जननी है, इसको समझाने की जरूरत नहीं। हर राष्ट्र में आज जो विश्व-युद्ध की तैयारी हो रही है, उसके पीछे भी सत्ता-प्राप्ति की आकांक्षा है—चाहे अश्वमेध होते हों, चाहे चुनाव; सबमें सत्ता-प्राप्ति की आकांक्षा है। संपत्ति प्रतिद्वन्द्विता की जड़ कैसे बनती है, यह तो घर-घर में देखा जाता है। संपत्ति के कारण प्रतिद्वन्द्विता को देखना हो, तो कचहरी में चले जाइये! जो प्रतिद्वन्द्विता की जननी है, वही हिंसा की भी जननी है। अगर हिंसा का निराकरण करना मनुष्य के अस्तित्व के लिए आवश्यक है, तो प्रतिद्वन्द्विता में मानव की प्रगति है, इस दर्शन को समाप्त किया जाय और इसको समाप्त करने के लिए आवश्यक है कि जो इसकी जननी है और जिसकी जड़ में सत्ता और संपत्ति की शाखा फूटती है, उसका निराकरण किया जाय। आज की जो क्रान्ति है, वह सत्ता और संपत्ति की मान्यता का निराकरण है। व्यक्तिगत संपत्ति ईश्वरीय देन है, यह हमारा कर्म-फल है—यह जो दर्शन है, उसे समाप्त करना होगा और सत्ता और दंड-शक्ति से ही मानव की शृंखला कायम रह सकती है, इस मान्यता को भी समाप्त करना होगा। हमें नयी मान्यता खड़ी करनी होगी। १०-२० हजार वर्षों से जो मान्यता थी कि प्रतिद्वन्द्विता ही जीवन है, इसे बदल कर प्रेम और सहकार्य ही प्रगति का मूल-मन्त्र है, इस मान्यता की प्रतिष्ठा करनी होगी। आज जो समस्या उपस्थित हुई है याने हिंसा के कारण जो विश्व-ध्वंस होने जा रहा है, उसके समाधान के लिए इस क्रान्ति की आवश्यकता है।

शोषण का निराकरण

आज समाज में मनुष्य मनुष्य का शोषण करता है। समाज में विषमता है, उस कारण जो शोषण होता हैं, उससे हिंसा का निर्माण होता है। एक तो सत्ता और व्यक्तिगत संपत्ति से हिंसा होती है और दूसरे, शोषण के कारण होती है। यह सही है कि शोषण भी प्रतिद्वन्द्विता के कारण होता है। लेकिन आज समाज में शोषण का एक स्वतन्त्र स्थान हो गया है। इसलिए शोषण का निराकरण यह पहली चीज समझ लेनी होगी।

'मैनेजरवाद' का निराकरण

अतएव शोषण की जड़ क्या है, उसे ढूँढना होगा। शोषण की जड़ है—कृपा, मेहरबानी। ये जो भला करने के बहाने हैं, वे ही शोषण की जड़ हैं। काशी के पास रहने वालों ने एक शब्द सुना होगा—दरिद्र-नारायण की सेवा।' यही शोषण की सबसे-बड़ी संस्था है। जो संपत्ति को पैदा करता है, वह दरिद्रनारायण हुआ और जो कुछ नहीं कमाता, वह श्रीमान्, 'दरिद्र-नारायण की सेवा करने वाला होता है! यह जो शोषक-वर्ग है, वह दरिद्रनारायण की सेवा करने के लिए राजा के रूप में आया। जनता को जब यह मालूम हुआ कि यह सेवक नहीं है, शोषक है और हमारा खून चूस कर खाता है, तो उसने राजा को भगाया। तब सेवा करने के लिए पूंजीपति आया। कुछ दिन इसकी भी दूकान चली। उत्पादक-वर्ग घबड़ा गया, तो उसे भी निकाला। अब मजा यह हुआ कि दरिद्रनारायण की सेवा-रूपी राक्षस जब राजा था, तब तो एक था। उसे काटा, तो पूंजीपति आया, पार्लमेंट बनी और एक की जगह पाँच सौ हुए! दूसरे रूप में दरिद्रनारायण की सेवा के लिए सामंतवाद मरा, तो पूंजीवाद आया, पूंजीवाद को काटा, तो आज 'मैनेजरवाद' आया! अगर हिंसा का निराकरण करने की आवश्यकता हो, तो ये जो शोषण की संस्थाएँ हैं, इनका निराकरण करने की आवश्यकता है। मैं कहता हूँ कि कृपा करके गरीबों को देने की कोई आवश्यकता नहीं है। आप लोग कृपा करके गरीबों से लेना बन्द कर दीजिये।

संकट का झूठा आतंक

लोग कहते हैं कि सेवावादी राक्षस जो आया है, वह अगर नहीं रहता है, तो सुसंघटित समाज मर जायगा। पहले वह कहता था कि राजा नहीं रहेगा, तो गड़बड़ी हो जायगी। आज वह कहने लगा कि हम मैनेजर नहीं रहेंगे, तो समाज खतम हो जायगा! दुनिया में जितने भी शोषक हैं, उनका स्वभाव और धर्म यही है, उनकी भाषा भी यही है। अंग्रेज जब इस देश में रहे, तो वे कहते थे कि अंग्रेज अगर यहाँ से चले जायेंगे, तो हमारी चैन समाप्त हो जायगी। बड़ी गड़बड़ी पैदा हो जायगी। आज भी वे जो 'मैनेजर' हैं, वे भी यही सोचते हैं कि अगर वर्ग नहीं रहेगा, तो उत्पादक-वर्ग एक-दूसरे का गला काटेगा और मर जायगा! लेकिन जब तक समाज में अनुत्पादक उपभोक्ता रहेगा, तब तक समाज में हिंसा कायम रहेगी। जीवित रहने के लिए सत्ता और व्यक्तिगत संपत्ति की मान्यता का निराकरण करने की जैसी आवश्यकता है, वैसी ही इन शोषकों का निराकरण करने की आवश्यकता है।

इस तरह आज हमें त्रिविध क्रांति करनी है-सत्तावाद का निराकरण, व्यक्तिगत संपत्तिवाद का निराकरण तथा मैनेजरवाद का निराकरण।

(ग्रामदान-शिविर, धौरहरा, बनारस, ता० ९-४)

तमिलनाड़ की क्रांतियात्रा से–

(मीरा व्यास)

गाँव-गाँव में मंदिर, यह तो तमिलनाड़ की पुरातन संस्कृति है। चित्रकारी, नक्काशी आदि कला की दृष्टि से कितने ही मंदिर अधिक सुंदर और मनोहर होंगे, परंतु श्रीविल्लिपुत्तुर का मंदिर अद्वितीय है। उसका वैशिष्ट्य यह है कि यहाँ विश्वेश्वर विष्णु की मूर्ति के साथ जगन्माता लक्ष्मी के स्थान पर 'आंडाळ' नाम की मामूली-सी एक स्त्री खड़ी है। भक्त-कवयित्री आंडाळ का नाम तो वृष्टि की कृपा से विनोबाजी की वाणी द्वारा बार-बार सुना हैं। वर्षा हो रही है और आंडाळ गा रही है, "मार्गळी तिंगळ मदि निरैन्द नन्नालाम नीरडि पोदुमिनो"–मार्गशीर्ष आ गया है, वर्षा हो रही है। चलो, हम सब बहनें स्नान के लिए, भगवद्दर्शन के लिए चलें। आंडाळ का लिखा हुआ "तिरुपावै" नाम का धर्म-काव्य-ग्रंथ तमिलनाड़ में घर-घर पढ़ा जाता है। श्रीविल्लिपुत्तुर आंडाळ का जन्म-स्थान है। आंडाळ एक भक्त-पुजारी की बेटी थी। बचपन से पिता के साथ प्रभु-मूर्ति को स्नान कराना, आरती उतारना, प्रसाद-समर्पण आदि उसका दैनिक क्रम बन गया था। परंतु बालिका आंडाळ को यह पसंद नहीं था कि प्रभु को पहले खिलाया जाय और फिर बाद में प्रसाद-रूप लिया जाय। प्रभु को नैवेद्य चढ़ाने के पहले ही वह स्वयं नैवेद्य ले लेती थी। कुछ दिनों तक यह बात छिपी रही। एक दिन पिता को इस बात का पता चला। अबोध बेटी का यह कार्य देख कर पिता उस पर खूब नाराज हुए। उसी रात को पुजारी को स्वप्न में भगवान् के दर्शन हुए और भगवान् ने कहा कि आंडाळ को प्रसाद पहले खाने से मना मत करो। तब से आंडाळ को पूरी आजादी मिल गयी। दिन पर दिन बीतते गये, वर्षों के बाद वर्ष बीतते गये, परंतु आंडाळ वही थी—भगवद्-भक्ति में लीन, प्रभु-स्तुति में तन्मय, ईश्वर स्मरण में खोयी हुई। अनेक वर्षों की उसकी कठिन तपस्या, अद्भुत भक्ति और पिता के उस स्वप्न के आधार पर यह लोकोक्ति हुई कि आंडाळ विष्णु की पत्नी ही है। आंडाळ की कहानी सुन कर राजस्थान की मीराबाई की कहानी याद आती है। दोनों में बाह्य फर्क इतना ही है कि मीरा लौकिक दृष्टि से विवाहित थी, तो आंडाळ अविवाहित। प्रभु को पति मान कर आंडाळ और मीरा, दोनों प्रभुमय बन गयीं।

सामूहिक भक्ति-भावना

आंडाळ की एक और विशेषता है, जिसने विनोबाजी को हिला दिया है। वह है, उसकी सामूहिक भक्ति की भावना। उसीका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन में कहा, "दुनिया में बहुत थोड़े भक्त ऐसे हो गये हैं, जो भगवद्-दर्शन की तैयारी में भी लोगों को याद करते रहे। जीवन का सबसे बड़ा भाग्य है, भगवद्-दर्शन। उस समय दुनिया को कौन याद करेगा? परंतु आंडाळ को उस भगवद्-दर्शन की उत्कण्ठा होते हुए भी भगवद्-दर्शनके आखिरी मौके पर भी हम जैसे दीन लोगों का स्मरण कायम है।" भक्ति बाबा को हमेशा रुलाती है, आज भी भक्ति ने रुलाया। बोले, "भगवान् के साथ भगवान् की बराबरी में खड़ी हुई एक स्त्री आज हमने देखी। जैसे मेरे सामने ये सारी मामूली स्त्रियाँ बैठी हैं, वैसे ही वह एक मामूली स्त्री थी।...परंतु उसने दिखा दिया कि मनुष्य अगर कोशिश करता है, तो वह भगवान् के पास पहुँच सकता है।"

विरुद नगर में कुछ विद्यार्थी विनोबाजी से मिलने के लिए आये थे। एक विद्यार्थी का सवाल था कि "आपको जितनी जमीन मिलती है, वह सबकी सब गरीबों की करुणा के खयाल से मिलती है अपनी प्रतिष्ठा के लोभ से?"

विनोबाजी ने कहा, "दोनों हो सकता है, एक ही मनुष्य में दोनों हो सकता है। दोनों में कोई विरोध नहीं है। मरने के बाद मुझे इंद्रपद मिलेगा, इस आशा से कोई दान दे और गरीबों को मदद पहुँचा सकूँ, इस आशा से कोई दान दे, तो इन दोनों में कोई विरोध नहीं है। मान लीजिये कि तुम गणित के विद्यार्थी हो, तो उसके ज्ञान के लिए पढ़ते हो या परीक्षा में पास होने के लिए?"

विद्यार्थी–"दोनों हेतु साधने के लिए!"

विनोबाजी–"तब फिर वह बेचारा दोनों हेतु रखता है, तो उसमें क्या बुरा है?"

उसके दूसरे ही दिन, ता. ५ अप्रैल को विनोबाजी का मुकाम राजपाळयम् शहर में था। राजपाळयम् व्यापार का एक केन्द्र है। यहीं स्वर्गस्थ श्री कुमारस्वामी राजा का स्थान है। विनोबाजी जब उड़ीसा में घूमते थे, तब आप उड़ीसा के गवर्नर थे। १९५० से '५२ तक आप मद्रास के मुख्य मंत्री रह चुके थे। विनोबाजी की उड़ीसा-यात्रा में आप उनसे से मिले थे, तब उन्होंने दक्षिण की यात्रा में उनके गाँव, राजपाळयम् में आने का निमंत्रण दिया था। बाबा ने उसे सहर्ष स्वीकार किया था। बाबा रामनाड़ जिले में आ रहे हैं, यह सुनते ही वे बाबा के स्वागत के लिए तैयारी कर रहे थे, परंतु दैववशात् २५ मार्च को ही वे ईश्वर के पास पहुँच गये। उनका प्रतिनिधित्व करके शहर की आबाल-वृद्ध जनता विनोबाजी का स्वागत करने के लिए सुबह से उमड़ पड़ी थी। शहर-प्रवेश के समय ही बाबा ने एक पीपल का वृक्षारोपण किया और उनके स्मरणार्थ, जो भवन बनने वाला है, उसका शिलान्यास भी किया। उनकी समाधि पर पुष्पहार चढ़ाया। फिर वहीं पर उनको स्मरण करके स्वागतार्थ आयी हुई जनता से दो शब्द कहे।

राजपालयम को 'लोकपालयम' बनाना है

बाबा ने कहा, "भूदान-यात्रा के सिलसिले में हमको यहाँ आना ही था, लेकिन हमारा स्वागत करने वाले जो थे, वे तो हमारे आने के पहले ही स्वर्ग में पहुँच गये। वह एक ऐसा स्थान है, जहाँ बिना नोटिस के बुलाया जाता है और जाना होता है। वह चलती राह है और आगे या पीछे, सबको वहाँ जाना ही पड़ता है! यह तो हमारा छोटा मुकाम है। भगवान् ने हमको दुनिया में मनुष्य का चोला देकर भेजा है, ताकि हम जो स्थिर है, उसकी सेवा करें। स्थिर तो यह समाज है। एक-एक आता है और एक-एक जाता है, लेकिन समाज जारी है। दूसरा, परमेश्वर सतत है, जो परमेश्वर के प्रतिनिधि के तौर पर समाज की सेवा करके हमको छुट जाना है। कुमारस्वामी चाहते थे कि उनका वह गाँव सुखी बने। हिंदुस्तान में कितने ही गाँव हैं, परंतु हमें एक ही गाँव याद है–और वह है गोकुल! हम चाहते हैं कि राजपाळयम् गोकुल बने। गोकुल याने सब समान–कोई ज्येष्ठ नहीं, कोई कनिष्ठ नहीं, कोई मध्यम नहीं। हंसवर्ण-समाज याने हंस-समान निष्पाप, निष्कलंक निर्मल समाज। वही आदर्श समाज है। राजपाळयम् को अब 'लोकपाळयम्' बनाना है और उस लोकपाळयम् में दूसरे का दुःख लेने का और अपना सुख देने का व्यापार चलाना है। कुमारस्वामी गये, लेकिन उनकी स्मृति हमारे पास है। उस स्मृति का उपयोग हम करेंगे, ऐसी भगवान् से प्रार्थना है।

प्रतिष्ठा पैसे से नहीं

राजपाळयम् में आसपास के गाँवों के करीब हजार शिक्षक इकट्ठे हुए थे। विनोबाजी ने कहा, "ग्रामदान तो बुनियादी तालीम की बुनियाद है। ग्रामदान के बिना बुनियादी तालीम सब दूर फैलना असंभव है। आज के समाज में शिक्षकों की प्रतिष्ठा गिर गयी है। वे "नौकर" की हैसियत में आ गये हैं। शिक्षक भी अपनी तनख्वाह बढ़ाने का ही आग्रह करते हैं। पैसे से जीवन जरा आरामदायी बनेगा, परंतु उससे प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होगी। मेहतरों की प्रतिष्ठा उनकी तनख्वाह बढ़ाने से नहीं बढ़ती है, जब सर्वसामान्य लोग ही उसके काम को स्वीकार करेंगे तभी उनकी प्रतिष्ठा बनेगी। वैसे शिक्षक जब "गुरु" की हैसियत में आयेंगे, तब उनकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। शिक्षण में "गुरु" की प्रतिष्ठा, जीवन में गुरु का स्थान, यह हिंदुस्तान में बहुत जरूरी बात है। ग्रामदान से यह हो सकेगा।"

तमिलनाड़ और केरल के सर्व-सेवा-संघ के कार्यकर्ता विनोबाजी के पास तमिलनाड़-सर्व-सेवा-संघ की रचना के बारे में चर्चा करने के लिए इकट्ठे हुए थे। बाबा ने उनसे कहा, "जैसे–'होलसेल डीलर' (थोक विक्रेता) गाँव-गाँव जाकर माल नहीं बेचता है, वह काम 'रिटेल' (फुटकर) व्यापारी का है, वैसे बाबा का काम है–जो लोग विचार समझते हैं और दूसरों को समझा सकते हैं, ऐसे लोगों को विचार समझाना। फिर वे लोग गाँव-गाँव जाकर उनकी लोकभाषा में, ग्रामीण भाषा में विचार समझा दें। आप सब लोग हमारी सेना है। कुछ लोग कहते हैं कि ये लोग आपके सैनिक हैं। हैं तो सही, परंतु उनको लड़ाई का अभ्यास नहीं है। उनसे यह काम नहीं हो सकेगा, उनको छोड़ दीजियेगा। कैसी अजीब बात है? लड़ने के लिए सेना तैयार की गयी और कभी लड़ाई के लिए मौका नहीं मिला! एक समय मिल गया, तो कहते हो कि लड़ना नहीं आता है, जहाँ तलवार को चमड़ी से स्पर्श हुआ, वहाँ किस तरह क्या करना, यह मालूम नहीं है। अरे, लड़ाई का मौका आया, तो छाती में हिम्मत चाहिए। उसी विचार से हृदय भर जाय, तभी लड़ाई के मौके पर खुशी से जा सकते हैं। हम अब तमिलनाड़ छोड़ कर पंद्रह दिन में जा रहे हैं, तो हमारे जाने के बाद कुछ ऐसी योजना हो, ताकि वहाँ कुल रचनात्मक काम ठीक चले। इस वास्ते हमने पंचविध प्रतिज्ञा का पालन करने वाला सर्वोदय-मंडल बनाया है। अब इन लोगों की सलाह हमेशा आपको मिलती रहेगी। दूसरा, आपको विचार-प्रचार करना चाहिए। यहाँ के स्थानिक सर्व-सेवा-संघ को नयी तालीम का और क्रांति का रूप आना चाहिए। अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ की सलाह आप ले सकते हैं। परंतु आखिरी निर्णय आप लोग ही लें। तभी आप स्वावलंबी बनेंगे।"

——

भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण

महाराष्ट्र

नगर जिले में ता० २५ मार्च से ३१ मार्च तक संपत्तिदान-सप्ताह मनाया गया। ६० कार्यकर्ता और अन्य स्त्री-पुरुषों ने घर-घर विचार-प्रचार का कार्य किया। विभिन्न पेशेवालों की सभाएं हुईं। बुनकरों की सभा में पहले मजदूर-वर्ग और परिणामस्वरूप मालिक भी दानपत्र भरते थे। श्री रावसाहब पटवर्धन ने दाता और सर्वोदय-विचार-प्रेमी लोगों की सभा में भाषण करके शंकाओं का समाधान किया। इस सप्ताह में १२७ दाताओं द्वारा ४०००) वार्षिक के संपत्तिदान-पत्र मिले। २५० दाताओं ने समय और श्रमदान-पत्र भरे। १२ दाताओं ने '५७ के अंत तक पूर्ण समय देने का संकल्प किया।

आदिलाबाद जिले की शिरपुर तहसील में २२ मार्च से १ अप्रैल तक ८ कार्यकर्ताओं ने २० गाँवों में ९० मील की पदयात्रा की। १० गाँवों के २४ दाताओं से २८५ एकड़ भूदान-पत्र और ५ गाँवों के २५७)वार्षिक के संपत्तिदान-पत्र मिले। २८ एकड़ भूमि वितरित की गयी। १० ग्राहक बने। ९२) की साहित्य-बिक्री हुई।

औरंगाबाद जिले की प्रथम भूदान-पदयात्रा पैठण तहसील में २५ मार्च से ३१ मार्च तक हुई। पदयात्रियों को आशीर्वाद देने के लिए श्री शिवाजी भावे पैठण आये थे। ६८ मील की पदयात्रा में ७० एकड़ भूदान मिला। १२० रु० की साहित्य-बिक्री हुई। २५ ग्राहक बने। जनता में जागृति पैदा हुई। अप्रैल के दूसरे हफ्ते में श्री दादा धर्माधिकारी ने प्रचार-दौरा किया।

मध्यप्रदेश

पिछले तीन महीनों में मध्यभारत में २००० रुपयों की साहित्य-बिक्री हुई। प्रचार-कार्य में काफी प्रगति की गयी। सम्मेलन के लिए सैकड़ों कार्यकर्ता तैयार हो रहे हैं। बीजलपुर क्षेत्र में संतोषप्रद कार्य हो रहा है। मन्दसौर जिले के लगभग १५० गाँवों में प्रचार-कार्य हुआ। ४०० रु० की साहित्य-बिक्री हुई।

छिंदवाड़ा में सर्वोदय-कार्यालय गत १४ मार्च से व्यवस्थित रूप से आरंभ हो गया है। १८ अप्रैल से इस जिले में वितरण-कार्य चालू हुआ।

पुराने मध्यभारत में ग्राम-भारती आश्रम, टबलाई के उपसंचालक श्री अखिल चंद्र पंड्या सन् '५७ की भूमिक्रांति को सफल बनाने के लिए आश्रम का आश्रय छोड़ कर क्रांति की गंगा में कूद पड़े। निमाड जिले के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता श्री चंपालालजी गोले ने षष्ठांश भूदान में दिया ही था, अब गोसंवर्धन-केन्द्र को छोड़ कर भूदान-कार्य में लगे हैं। लोनारा ग्राम के किसान श्री शोभाराम पटेल भी विचार-प्रचार के साथ लोगों की धुम्र-पान की आदत को छुड़वाने में प्रयत्नशील हैं।

महाकोशल के १७ जिलों में ३१ मार्च '५७ के अंत तक कुल ३९,२३९ दाताओं द्वारा १,०१,३०० एकड़ भूदान मिला और ६२०० आदाताओं में २६,११३ एकड भूमि वितरित की गयी है।

पंजाब

करनाल जिले के पानीपत क्षेत्र में ग्राम-सेवक भाई-बहनों और जिला-निवेदक ने ३० मील की पदयात्रा की। महावटी के चौधरी रामदिया ने १४ बीघा भूमि का सर्वस्व-दान दिया। कुल ८४ बीघा भूदान और अन्य दान भी मिले।

हिसार जिले के कार्यकर्ताओं ने सिरसा तहसील में २८ गाँवों में १३० मील की पदयात्रा की। फलस्वरूप ३५१ बीघा भूमि, २ हल ६८ मन बीज, श्रमदान, संपत्तिदान आदि के कुल २११ दाताओं से दानपत्र प्राप्त हुए।

अखिल भारत भूदान-पदयात्रा

कन्याकुमारी से २ फरवरी '५६ को निकली हुई भूदान-पदयात्रा की टोली केरल, मद्रास, आंध्र, मैसूर, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान और दिल्ली की ४००० मील की पदयात्रा करके १ मार्च को हिसार जिले में पहुँची। वहाँ २१ मार्च तक इस टोली ने ३६ ग्रामों में १८४ मील की पदयात्रा की। परिणामस्वरूप १४८ बीघा भूदान, ९ हल, २ बैल, ८ दिन का श्रमदान और २८ मन बीज के दानपत्र १०७ दाताओं से प्राप्त हुए। इसके अतिरिक्त ३० संपत्तिदान-पत्र भी मिले। पदयात्रा-टोली का निर्देशन श्री चेरियन थॉमस और श्री श्रीकान्त आपटे कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश होते हुए यह पदयात्रा-टोली २ अक्टूबर '५७ को सेवाग्राम पहुँचेगी।

असम की प्रगति

छह जिलों के ७५० गाँवों में ३५ टोलियों ने कुल १७५८ मील की पदयात्राएँ कीं। फलस्वरूप १५० गाँवों के ६४८ दाताओं से कुल ६९०६ बीघा भूदान और १७२ दाताओं से ३६१९) संपत्तिदान मिला। अन्य दान में ५४ साधन-दान, १३९ बैल, १४३ गायें मिलीं। ५३ दाताओं ने श्रमदान दिया। ११८) अन्नदान भी मिला। २७ बीघा भूमि वितरित की। ७८२) की साहित्य-बिक्री हुई, १०६ ग्राहक बनाये गये। ३ से १५ अप्रैल तक सुश्री विमलाबहन भूदान-विचार प्रचारार्थ यात्रा की।

कर्नाटक

१ जनवरी '५७ से ३१ मार्च '५७ तक ५ जिलों के ८ तालुकों में सामूहिक पदयात्राएँ हुईं। इनमें दो हजार गाँवों में प्रचार किया गया। दो हजार एकड़ जमीन प्राप्त हुई। कन्नड साप्ताहिक 'भूदान' के पाँच सौ ग्राहक बनाये गये। एक हजार रुपये की साहित्य-बिक्री हुई। २५ हाईस्कूलों में विद्यार्थियों की सभाएँ हुईं। विद्यार्थी-वर्ग, शिक्षक-वर्ग तथा स्थानीय सज्जनों का पर्याप्त सहयोग मिला।

प्रांत भर में ग्रामदान का प्रचार तीव्र गति से हो रहा है। यहाँ की जनता ग्रामदान के लिए तत्पर है। प्रबल संभावना है कि पूज्य विनोबाजी के यहाँ आने से पूर्व तालुकादान की घोषणा की जायगी। मैसूर तथा कर्नाटक के लगभग तीस कार्यकर्ता सतत घूम-घूम कर कार्य में संलग्न हैं।

सर्वोदय मेला-विवरण :

परंधाम-पवनार (वर्धा) के सर्वोदय-मेले में इस वर्ष विदर्भ-नागपुर के ३६८ गाँवों से ९०५६ और बाहर से १६८, इस तरह कुल ९२२४ गुण्डियाँ सूत्रांजलि मिली। गत वर्ष ४२२ गाँवों से ७७९९ गुण्डियाँ मिली थीं।

बडवानी के पास नर्मदा-किनारे राजघाट पर लगे सर्वोदय-मेले के अवसर पर निमाड, धार और झाबुआ क्षेत्र के रचनात्मक और भूदान-कार्यकर्ताओं का सम्मेलन हुआ। मेले और सम्मेलन का सारा खर्च जनता द्वारा ही हुआ। ४५०) का सर्वोदय-साहित्य बिका। सूत्रांजलि में १५८६ गुण्डियाँ मिलीं। ५० गाँवों में पदयात्रा द्वारा मध्यभारत में कुल ३५२८ गुण्डियाँ सूत समर्पित हुआ है।

सर्व-सेवा-संघ के दक्षिण विभाग के कार्यकर्ताओं ने कोइंबतूर, मद्रास, तंजौर, द. अर्काट आदि क्षेत्र में स्थानीय कार्यकर्ताओं और खादी-कार्य में रुचि रखने वालों के सहयोग से जनवरी ३० से फरवरी १२ तक के सर्वोदय-पक्ष में पदयात्राओं द्वारा भूदान-प्रचार और सर्वोदय-मेलों का आयोजन किया। कोइंबतूर जिले में पेरियनायकम् पालयम् में २७ भूमिहीन परिवारों में १२० एकड़ भूमि वितरित की गयी। प्राप्त संपत्तिदान भी भूमिहीनों को औजार-व्यवस्था के लिए दिया गया।

संवाद-सूचनाएँ :

बम्बई में भूदान-पदयात्रा

सुश्री विमलाबहन के मार्गदर्शन में बंबई शहर और उपनगरों में ता० १९ अप्रैल से २ मई तक तक भूदान-पदयात्रा होगी। पदयात्रा का शुभारंभ बोरीवली कोरा-केन्द्र पर ता. १९ की सुबह ८ बजे श्री काकासाहब कालेलकर के आशीर्वचन द्वारा होगा। आशा है, सबका सहयोग मिलेगा।

भूदान-सेवा-कार्यालय, मणिभवन, —गणपति शंकर देसाई
१९ लेबरनम् रोड, बंबई ७

श्री डेविड भाई का स्वास्थ्य

सर्वोदय-परिवार श्री डेविड भाई हॉगेट की भूदान-सेवाओं से अपरिचित नहीं है। गत ग्रीष्म में आस्ट्रिया में वे भयंकर दुर्घटना से ग्रस्त हो गये थे, जिसके कारण गर्दन से नीचे के उनके सारे अंग को लकवा मार गया था। अभी हाल में श्री डोनाल्ड ग्रुम के पत्र से ज्ञात हुआ है कि उनके शरीर के ऊपर के अंगों में धीरे-धीरे कुछ चेतना आ रही है। अब वे रोज कई घंटे पहियेदार कुर्सी पर बैठ लेते हैं। आशा है कि आप शीघ्र ही स्वस्थ हो जायेंगे।

भूल-सुधार : २९ मार्च के '५७ "भूदान-यज्ञ" में श्री गोविंद रेड्डी के "कोरापुट में एक साल का खेती का अनुभव" शीर्षक लेख में पृष्ठ ५ पर पहले कॉलम में ऊपर से २८ वीं पंक्ति में "२५००७ रुपये खर्च हुए।" की जगह "२५०० रु० खर्च हुए," इस तरह का सुधार कर लेने की कृपा करें।

सर्वोदय-सम्मेलन-सूचनाएँ

इस सूचना के द्वारा हम सभी सर्वोदय-प्रेमियों को सम्मेलन में निमंत्रित करते हैं।

सम्मेलन में भोजन की व्यवस्था रहेगी। यदि आप चाहें, तो पैसा देने पर भोजन कर सकेंगे। ग्रामोद्योगी भोजन का व्रत रखने वाले कृपया अपने व्रत की सूचना तुरंत अ. भा. सर्व-सेवा-संघ, पो. खादीग्राम (जिला मुंगेर) या मंत्री, स्वागत-समिति, सर्वोदय-सम्मेलन, पो० कालडी, त्रिचुर (द. भा.) के पते पर भेज दें।

हर साल की तरह सम्मेलन के पूर्व ता. १ मई से ८ मई तक सफाई-शिविर भी होगा। श्री कृष्णदास शाह के मार्गदर्शन में सफाई-कार्य का शिक्षण मिलेगा।

सम्मेलन के बाद कालडी में ता. ११-१२ मई को सत्याग्रही लोक-सेवकों का शिविर होगा, जिसमें विनोबाजी भी उपस्थित रहेंगे। आशा है, अधिक से अधिक लोकसेवक इस सूचना को ही निमंत्रण मान कर अब तक के काम के अनुभव पर होने वाली चर्चा में भाग लेंगे।

सम्मेलन में आने वाले सज्जन प्रति प्रौढ व्यक्ति ३) तीन रुपया और १२ साल से कम उम्र के बच्चों के लिए १।।) डेढ़ रुपया निवास-शुल्क अति शीघ्र जमा करके रेलवे-कन्सेशन-सर्टिफिकेट प्राप्त कर लें। अपने क्षेत्र के रेलवे-अधिकारी डी. टी. एम. या सी. टी. एम. से उसके आधार पर रेलवे-कन्सेशन याने आधे रेलवे-कराये की सुविधा मिलेगी। निवास-शुल्क जमा करने के लिए प्रांतवार अधिकृत पते ता. ५ और १२ अप्रैल के अंक में दिये गये हैं।

दक्षिण प्रान्तवालों में निम्न स्थान से रेलवे-कन्सेशन-सर्टिफिकेट ३) निवास-शुल्क भेजने पर मिल सकेंगे।

आन्ध्र : (१) सर्वोदय-साहित्य-प्रचार-समिति, गांधी भवन, हैदराबाद द०
(२) श्री प्रभाकरजी, सर्वोदय-कार्यालय, अनन्तपुर (आंध्र)

तमिलनाड : (१) खादी-वस्त्रालय, रतन बाजार, मद्रास
(२) ,, ,, त्रिचनापल्ली
(३) ,, ,, मदुरा
(४) ,, ,, राजपालयम (जि० रामनाड)
(५) सर्व-सेवा-संघ, गांधीनगर, त्रिचुर

केरल : (१) खादी-वस्त्रालय, पालघाट
(२) मंत्री, स्वागत-समिति, सर्वोदय-सम्मेलन, पो. कालडी, जि० त्रिचुर

कर्नाटक : (१) सर्व-सेवा-संघ, खादी-वस्त्रालय, हुबली

कुछ खास प्रेस-प्रतिनिधियों को निमंत्रण गये हैं। अगर किसीको सम्मेलन में फोटो लेने हैं, तो कृपया पहले अनुमति ले लें। समय पर इजाजत देने में कठिनाई होगी।

सर्वोदय-संमेलन के लिए स्वागत-समिति बन गयी है, जिसके अध्यक्ष श्री के० केलप्पन और मंत्री श्री इकंडा वारियर हैं। स्वागत-समिति का पता : नवम् सर्वोदय-सम्मेलन, स्वागत-समिति, पो० कालड़ी Kaladi (Dist. Trichur)

—सहमंत्री

पटामेटा में ग्रामराज्य-सम्मेलन

ता. २७ और २८ अप्रैल को पटामटा (विजयवाड़ा) में श्री जयप्रकाशजी की अध्यक्षता में ग्रामराज्य-सम्मेलन होगा। ग्रामराज्य की स्थापना में रुचि रखने वाले कोई भी सज्जन भाग ले सकते हैं। पटामटा विजयवाड़ा (बेजवाड़ा) रेलवे-स्टेशन से तीन मील पर है। अधिक जानकारी के लिए लिखिये।
पता : श्री गोरा, पो० पटामटा, जिला—कृष्णा (आंध्र) —लवणम्

निवेदकों की नामावली

उत्तर प्रदेश : (१) श्री शिवदास त्रिपाठी, देवरिया
(२) श्री बलरामभाई, सहारनपुर
(३) श्री अर्जुनभाई, बांदा
(४) श्री कन्हैयाभाई, बनारस

बंगाल : (१) श्री करुणाकांत सहाय, कुचबिहार

राजस्थान : (१) श्री प्रभुदयाल वैद्य, डीग, भरतपुर
(२) श्री यज्ञदत्त उपाध्याय, अजमेर

संशोधन : श्री बनवारीलाल देवी (गलत : वैदी)

पंजाब : (१) श्री खुशीरामभाई, रेवाड़ी (गुडगाँव)

सर्वोदय-सम्मेलन, कालडी में प्राप्य

नवीनतम सर्वोदय-साहित्य

सर्वोदय-सम्मेलन, कालड़ी में सर्व-सेवा-संघ एवं हमारी प्रकाशन-समितियों द्वारा अभी तक प्रकाशित सभी भारतीय भाषाओं के सर्वोदय एवं भूदान-साहित्य तथा पत्र-पत्रिकाओं को छोटी-सी प्रदर्शनी के रूप में दिखाया जायगा। हमें यह सूचित करते हुए खुशी है कि उस समय 'सर्वोदय-स्वाध्याय-योजना १९५७' का ३००० पृष्ठों वाला संपूर्ण सेट, जिसका मूल्य केवल १० रु० रखा गया है, हम पाठकों को दे सकेंगे। इस सेट की पुस्तकों में भूदान की समग्र कल्पना और उसकी सांस्कृतिक भूमिका पर "भूदान क्या और क्यों ?", ज्ञानदेव के ज्ञान-संदेश पर विनोबाजी की चिन्तनिका, निधिमुक्ति और तंत्र-मुक्ति का विचार समझाने वाली पुस्तिका, लोकनीति की बात बताने वाली "राजनीति से लोकनीति की ओर," श्रीकृष्णदत्त भट्ट के चिन्तनपूर्ण उद्बोधक संस्मरण—"नक्षत्रों की छाया में," पूंजीवाद को समाप्त करने की संदेशवाहिनी पुस्तक—"व्याज-बट्टा," "सफाई : विज्ञान और कला," "जमनालालजी को पू० बापू के पत्र," "भूदान-गंगा" के अद्यतन दो खंड और "ग्रामदान" की कल्पना को स्पष्ट करने वाली पुस्तक एवं अ० भा० सर्व-सेवा-संघ की अधिकृत योजना की दिशा देने वाली, सर्वोदय-संयोजन आदि १८ पुस्तकें इस सेट में रहेंगी। इस सेट के अलावा पू० दादा धर्माधिकारी की पुस्तक "सर्वोदय-दर्शन," जिसकी साल भर से लोग प्रतीक्षा कर रहे थे, वह भी सम्मेलन के समय उपलब्ध हो सकेगी। इस ४५० पृष्ठों की सजिल्द पुस्तक का मूल्य तीन रुपये रहेगा। यह सारा साहित्य सम्मेलन के समय आप खरीद सकेंगे। हिन्दी के अलावा भारत की अन्य सारी भाषाओं का साहित्य भी वहाँ बिक्री के लिए रहेगा। 'प्लानिंग फॉर सर्वोदय' का इंग्लिश संस्करण भी प्राप्त हो सकेगा तथा भूदान के उद्गम की कथा "भूदान-गंगोत्री" भी।

पुनर्मुद्रित पुस्तकें :

निम्न किताबों का शीघ्र ही नया संस्करण निकलनेवाला रहा है। किताबों के सुधार आदि के संबंध में किसीके कोई सुझाव हों, तो शीघ्र भिजवा दिये जायँ। इसी तरह इन किताबों का कहीं अधिक स्टॉक हो, जो दो-तीन माह में भी न बिक सके, तो सूचित कीजिये, ताकि अन्यत्र भिजवाने की व्यवस्था की जा सके।

(१) त्रिवेणी
(२) पावन प्रकाश (नाटक)
(३) क्रान्ति की पुकार
(४) सुन्दरपुर की पाठशाला
(५) सत्संग
(६) साम्ययोग की राह पर
(७) भूदान-गंगा : खंड १
(८) भूदान-गंगा : खंड २
(९) साहित्यकों से
(१०) ज्ञानदेव-चिंतनिका
(११) शासन-मुक्त समाज

—संचालक, सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१.	खादीवालों से—	विनोबा	१
२.	त्रिविध क्रान्ति की आवश्यकता	धीरेन्द्र मजूमदार	२
३.	क्रान्ति-विज्ञान	दादा धर्माधिकारी	३
४.	ग्रामदान और तीन पुरुषार्थ	विनोबा	४
५.	नारायण को सर्वस्व-समर्पण ही सर्वोदय !	,,	६
६.	सर्वोदय की दृष्टि :		
	१. ऊपर वाले झुकें, नीचे वाले उठें	श्रीकृष्णदत्त भट्ट	६
७.	संरक्षण और सर्वोदय : १.	—	७
८	कोरापुट का गरंडा ग्राम : नवनिर्माण के पथ पर	अनसूया बजाज	८
९.	कालडी : जहाँ सर्वोदय-सम्मेलन हो रहा है	एस. वी. गोविंदन्	९
१०.	तमिलनाड की क्रांतियात्रा से—	मीरा व्यास	१०
११.	भूदान-आंदोलन के बढ़ते चरण सूचनाएँ आदि	—	११
१२.	सम्मेलन-सूचनाएँ, प्रकाशन-समाचार आदि	—	१२

सिद्धराज ढड्ढा सहमंत्री, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, काशी